ग्राम-पंचायतोंके लिअे अुपयोगी पुस्तकें

१.	अस्पृश्यता	गांधीजी	०.१९
२.	आत्मकथा	”	१.५०
३.	आरोग्यकी कुंजी	”	०.४४
४.	खादी	”	२.००
५.	खुराककी कमी और खेती	”	२.५०
६.	गोसेवा	”	१.५०
७.	पंचायत राज	”	०.३०
८.	बालपोथी	”	०.१९
९.	बुनियादी शिक्षा	”	१.५०
१०.	मंगल-प्रभात	”	०.३७
११.	रचनात्मक कार्यक्रम	”	०.३७
१२.	रामनाम	”	०.५०
१३.	सर्वोदय	”	२.००
१४.	सहकारी खेती	”	०.२०
१५.	हमारे गांवोंका पुर्ननिर्माण	”	१.५०
१६.	हरिजनसेवकोंके लिअे	”	०.३७
१७.	शराबबन्दी क्यों ?	भारतन् कुमारप्पा	०.६२
१८.	ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम	जुगतराम दवे	१.२५
१९.	बापूकी झांकियां	काकासाहब कालेलकर	१.००
२०.	भूदान-यज्ञ	विनोबा	१.२५
२१.	गांधीजीके पावन प्रसंग–१	लल्लुभाअी मकनजी	०.३७
२२.	गांधीजीके पावन प्रसंग–२	”	०.३७
२३.	जीवनकी सुवास	”	०.३७
२४.	जीवनका पाथेय	(भूदान-सम्बन्धी प्रसंग)	०.५०
२५.	सरदारकी सीख		०.८०
२६.	बापूके जीवन-प्रसंग	मनुबहन गांधी	०.५०
२७.	बापू — मेरी मां	”	०.६२

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४

मेरा समाजवाद

गांधीजी

संग्राहक
आर० के० प्रभु

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद–१४

अनुक्रमणिका

१

मेरा समाजवाद

सच्चा समाजवाद तो हमें अपने पूर्वजोंसे प्राप्त हुआ है, जो हमें यह सिखा गये हैं: "सब भूमि गोपालकी है; अिसमें कहीं मेरी और तेरीको सीमायें नहीं हैं। ये सीमायें आदमियोंकी बनायी हुअी हैं और अिसलिअे वे अिन्हें तोड भी सकते हैं।" गोपाल यानी कृष्ण यानी भगवान। आधुनिक भाषामें गोपाल यानी राज्य यानी जनता। आज जमीन जनताकी नहीं है, यह बात सही है। पर अिसमें दोष अुस शिक्षाका नहीं है। दोष तो हमारा है, जिन्होंने अुस शिक्षाके अनुसार आचरण नहीं किया। मुझे अिसमें कोअी सदेह नहीं कि अिस आदर्शको जिस हद तक रूस या दूसरा कोअी देश पहुंच सकता है, अुस हद तक हम भी पहुंच सकते हैं; और वह भी हिंसाका आश्रय लिये बिना। पूंजी-वालोंसे अुनकी पूंजी हिंसाके जरिये छीनी जाय, अिसके बजाय यदि चरखा और अुसके सारे फलितार्थ स्वीकार कर लिये जायं तो वही काम हो सकता है। चरखा सम्पत्तिके हिंसक अपहरणकी जगह ले सकनेवाला अत्यन्त प्रभावकारी साधन है। जमीन और दूसरी सारी सम्पत्ति अुसकी है जो अुसके लिअे काम करे। दुःख अिस बातका है कि किसान और मजदूर या तो अिस सरल सत्यको जानते नहीं हैं या यों कहें कि अुन्हें यह सत्य जाननेका मौका ही नहीं दिया गया है।

हरिजन, २-१-'३७

समाजवादका जन्म अुस वक्त नहीं हुआ था जब यह पता लगा कि पूंजीपति पूंजीका दुरुपयोग करते हैं। जैसा कि मैंने कहा है, समाजवाद ही नहीं, साम्यवाद भी अीशोपनिषद्के पहले मन्त्रमें स्पष्ट है। सच बात तो यह है कि जब कुछ सुधारकोंका विचार-परिवर्तनकी पद्धतिमें विश्वास नहीं रहा, तब जिसे वैज्ञानिक समाजवाद कहते हैं अुसका जन्म हुआ। मैं अुसी समस्याको हल करनेमें

लगा हुआ हूं, जो वैज्ञानिक समाजवादियोंके सामने है। लेकिन यह सही है कि मेरी पद्धति सदासे अेकमात्र शुद्ध अहिंसाकी रही है। वह असफल हो सकती है। अैसा हुआ तो अुसका कारण अहिंसाकी कलाका मेरा अज्ञान होगा। मैं अुस सिद्धान्तका अेक अकुशल प्रतिपादक हो सकता हूं; जिसमें मेरा विश्वास दिनोंदिन बढ़ रहा है। चरखा-संघ और ग्रामोद्योग-संघ वे संगठन हैं, जिनके द्वारा अहिंसाकी कलाकी अखिल भारतीय पैमाने पर परीक्षा हो रही है। ये स्वतंत्र संस्थायें कांग्रेसने खास तौर पर अिसलिअे कायम की हैं कि नीतिके अुन अुतार-चढ़ावोंके बंधनमें, जो कांग्रेस जैसी सर्वथा लोकतांत्रिक संस्थामें हमेशा होते रह सकते हैं; फंसे बिना मैं अपने प्रयोग करता रह सकूं।

हरिजन, २०–२–'३७

२

समाजवादी कौन ?

समाजवाद अेक सुन्दर शब्द है और जहां तक मुझे मालूम है, समाजवादमें समाजके सब सदस्य बराबर होते हैं — न कोअी नीचा होता है, न कोअी अूंचा। किसी व्यक्तिके शरीरमें सिर सबसे अूपर होनेके कारण अूंचा नहीं होता और न पैरके तलवे जमीनको छूनेके कारण नीचे होते हैं। जैसे व्यक्तिके शरीरके सब अंग बराबर होते हैं, वैसे ही समाजरूपी शरीरके सारे अंग भी बराबर होते हैं। यही समाजवाद है।

तीसरा अीसाअी है, चौथा पारसी है, पांचवां सिख है और छठा यहूदी है। अिनमें भी बहुतसी अप-जातियां हैं। मेरी कल्पनाकी अेकता या अद्वैतवादमें सब अेक हो जाते हैं, अेकतामें समा जाते हैं।

अिस अवस्था तक पहुंचनेके लिअे हम अेक-दूसरेकी तरफ देखते नहीं रह सकते। जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जाय, तब तक हम कोअी हलचल न करें, अपने जीवनमें कोअी फेरफार न करके भाषण देते रहें, पार्टियां बनाते रहें और बाज पक्षीकी तरह जहां शिकार मिल जाय वहां अुस पर झपट पड़ें — यह समाजवाद नहीं है। समाजवाद जैसी शानदार चीज झपट मारनेसे हमसे दूर ही जानेवाली है।

समाजवाद पहले समाजवादीसे शुरू होना है। अगर अैसा अेक भी समाजवादी हो तो आप अुस पर शून्य बढ़ा सकते हैं। पहले शून्यसे अुसकी ताकत दस गुनी हो जायगी। अुसके बाद हरअेक शून्यका अर्थ पिछली संख्यासे दस गुना होगा। परन्तु यदि आरम्भ करनेवाला स्वयं ही शून्य हो, दूसरे शब्दोंमें कोअी भी आरम्भ नहीं करे, तो कितने ही शून्योंके बढ़ जाने पर भी परिणाम शून्य ही होगा। शून्योंके लिखनेमें जितना समय और कागज खर्च होगा वह भी व्यर्थ ही जायगा।

यह समाजवाद स्फटिककी तरह शुद्ध है। अिसलिअे अुसे सिद्ध करनेके साधन भी शुद्ध ही होने चाहियें। अशुद्ध साधनोंसे प्राप्त होनेवाला साध्य भी अशुद्ध ही होता है। अिसलिअे राजाका सिर काट डालनेसे राजा और प्रजा बराबर नहीं हो जायेंगे। और न मालिकका सिर काटनेसे मालिक और मजदूर बराबर हो जायेंगे। हम असत्यसे सत्यको प्राप्त नहीं कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिंसा और सत्य दो चीजें हैं? हरगिज नहीं। अहिंसा सत्यमें और सत्य अहिंसामें छिपा हुआ है। अिसीलिअे मैंने कहा है कि वे अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं। वे अेक-दूसरेसे अभिन्न हैं। सिक्केको किसी भी तरफसे पढ़ लीजिये। केवल पढ़नेमें ही फर्क है — अेक तरफ अहिंसा है, दूसरी तरफ सत्य। दोनोंका

मूल्य अेक ही है। सम्पूर्ण शुद्धताके विना यह दिव्य स्थिति अप्राप्य है। मन या शरीरकी अशुद्धि रखी और आपमें असत्य और हिंसा आअी।

अिसीलिअे सत्य-परायण, अहिंसक और शुद्ध-हृदय समाजवादी ही भारत और संसारमें समाजवादी समाज स्थापित कर सकेंगे। जहां तक मैं जानता हूं, संसारमें कोअी भी देश अैसा नहीं है जो शुद्ध समाजवादी हो। अुपरोक्त साधनोंके विना अैसे समाजका अस्तित्वमें आना असम्भव है।

हरिजन, १३–७–'४७

३

बिना 'वाद'का समाजवाद

[गांधीजीने १९३३ में सविनय कानून-भंग आन्दोलन स्थगित कर दिया, अुसके वाद कांग्रेसमें 'समाजवादी' दलका अुदय हुआ। और १९३४ में पटनामें हुअी पहली 'कांग्रेस सोशलिस्ट कान्फरेन्स' में समाजवादी दलका कार्यक्रम वनाया गया। अिसके प्रकाशित होने पर पार्टीके कुछ नेताओंने निश्चित रूपसे यह जाननेका प्रयत्न किया कि गांधीजीके अुस कार्यक्रमके वारेमें क्या विचार हैं। गांधीजीके सामने छह प्रश्न रखे गये, जिनके अुन्होंने अुत्तर दिये। ये प्रश्न और अुत्तर गांधीजीकी मृत्युके वाद पहले-पहल १९४८ में 'अिण्डियन पार्लियामेन्ट' नामक पत्रमें प्रकाशित हुअे थे, जिसका सम्पादन श्री के० श्रीनिवासन् करते थे। यहां वे प्रश्नोत्तर लेनेके लिअे हम अिस पत्रके आभारी हैं।]

पूछे गये प्रश्न

१. कांग्रेसमें समाजवादी दलके अुदयके वारेमें आपका क्या मत है और पटनामें कांग्रेस सोशलिस्ट कान्फरेन्सने जो कार्यक्रम वनाया है, अुस पर आपकी सामान्य टीका क्या है?

२ क्या आप अुत्पादनके (अिसमें जमीन भी शामिल है), वितरणके और विनिमयके सारे साधनोंके अधिकाधिक समाजीकरणके समाजवादी आदर्शको स्वीकार करते हैं ?

३. स्वराज्यमें आप खानगी साहस (अुद्योग-धन्धों) के जारी रहनेकी कल्पना करते हैं या योजनाबद्ध अर्थ-रचना और राज्य द्वारा किये जानेवाले अुत्पादनकी कल्पना करते हैं ?

४. भारतके राजा-महाराजाओंके शासनका अन्त करनेकी समाजवादी दलकी जो माग है, अुसके बारेमें आपकी क्या राय है ?

५. क्या आप यह मानते हैं कि धनी वर्गों और शोषित वर्गोंके बीच हितोंका जो सघर्ष है अुसका परिणाम वर्गयुद्धमें आयेगा ?

६. कांग्रेस समाजवादी दलका यह दावा है कि जन-आन्दोलनको जन्म देनेका अेकमात्र कारगर तरीका यह है कि आर्थिक हितोंके आधार पर आम जनताका सगठन किया जाय और अुसके प्रतिदिनके सघर्षमें भाग लिया जाय । अिस तरीकेमें और आपकी कल्पनाके सविनय कानून-भगमें कहा तक भेद है ?

गांधीजीका अुत्तर

मै कांग्रेसमें समाजवादी दलके जन्मका स्वागत करता हू । लेकिन मै यह नही कह सकता कि छपी पत्रिकामें जो कार्यक्रम दिया गया है अुसे मैं पसन्द करता हू । मेरे विचारसे वह हमारे यहाकी परिस्थितियोंकी अुपेक्षा करता है और अुसके बहुतसे मुद्दोंके पीछे जो बातें पहलेसे स्वीकार करके चला गया है अुन्हें मै पसन्द नही करता। वे यह बताती हैं कि धनी वर्गों और आम लोगोंके बीच या पूंजीपतियों और मजदूरोंके बीच आवश्यक रूपमें अैसा वैर या विरोध है कि वे अेक-दूसरेके भलेके लिअे कभी काम कर ही नहीं सकते। मेरा बड़े लम्बे समयका अनुभव अिससे अुलटा है। जरूरत अिस बातकी है कि मजदूर या कामगार अपने अधिकारोंको जानें और अुन्हें आग्रहके साथ जतानेका तरीका भी जानें।

"भारतके राजा-महाराजाओंके शासनके अन्त" की मागका अर्थ है अैसी सत्ताका दावा करना जो समाजवादी दलके पास नहीं है,

"विदेशी सरकार द्वारा किये गये भारतके तथाकथित सार्वजनिक कर्जोंसे अिनकार करनेकी" जो बात कही गयी है, वह बहुत अस्पष्ट और गोलमोल है और अेक प्रगतिशील तथा जाग्रत पार्टीके कार्यक्रममें गहरा विचार किये बिना जल्दीमें शामिल की गयी बात मानी जायगी। कांग्रेसने अिस बारेमें अेकमात्र सच्चा और राजनीतिक कुशलता प्रगट करनेवाला प्रस्ताव रखा है — यानी अुसने यह सुझाया है कि भारतकी भावी स्वराज्य सरकार अिस सार्वजनिक कर्जका कोअी भाग अपने सिर पर ले, अिसके पहले सारे कर्जका प्रश्न अेक निष्पक्ष अदालतके सामने पेश किया जाना चाहिये।

"अुत्पादन, वितरण और विनिमयके सारे साधनोंके अधिकाधिक राष्ट्रीयकरण" की मांग अितनी अविचारपूर्ण है कि वह स्वीकार नहीं की जा सकती। रवीन्द्रनाथ टागोर अद्भुत अुत्पादनके अेक साधन हैं। मैं नहीं मानता कि वे अपने पर राष्ट्रका अधिकार स्थापित होनेकी बात स्वीकार करेंगे।

जहां तक "विदेशी व्यापारका अेकाधिकार राज्यके हाथमें देनेकी बात" है, मैं कहूंगा कि क्या राज्यको अपने हाथमें आअी हुअी समूची ...से सन्तोष नहीं मानना चाहिये? क्या अुसे अपनी सारी सत्ताओंका

अेक ही सपाटेमें अुपयोग भी करना चाहिये — फिर भले अैसा करना जरूरी हो या न हो?

"किसानों और मजदूरोंके कर्जको रद करनेकी बात" अैसी है, जिसे खुद कर्जदार भी कभी पसन्द नहीं करेंगे; क्योंकि यह कदम अुनके लिअे आत्म-घातक सिद्ध होगा। जरूरत अिस बातकी है कि अिन कर्जोंकी जाच की जाय, जिनमें मे कुछ मैं जानता हूं कि जाचकी कसौटी पर खरे नही अुतरेंगे।

आम लोगोमें किफायतशारीकी आदत बढ़ानेके लिअे मुझे अुन्हें शिक्षा देनी होगी। अुन्हें यह बताकर कि बुढ़ापा, बीमारी, दुर्घटना और अिसी तरहकी दूसरी आफतोंके बारेमें रक्षाके अुपाय करना अुनका कर्तव्य नही है, मुझे अुन्हे पगु और परावलम्बी नहीं बना देना चाहिये।

"हड़ताल करनेके अधिकार" शब्द-प्रयोगका अर्थ मेरी समझमें नही आता। वह अैसे हर आदमीको प्राप्त है जो हड़तालके साथ जुड़े हुअे खतरोंको अुठानेके लिअे तैयार है।

"राज्य द्वारा पालन-पोषण और सार-संभाल प्राप्त करनेका बालकका अधिकार" क्या पिताको अपने बालकोंका पालन-पोषण करनेके फर्जसे मुक्त कर देता है?

धारा १३ में "जमीदारीके अन्त" का स्पष्ट अर्थ यह होगा कि जमीदारों और तालुकदारोंसे अुनकी जमीनें छीन ली जाय। मैं जमीदारीका अन्त नही चाहता, लेकिन यह चाहता हू कि जमीदारों और अुनके काश्तकारोंके बीच अुचित और न्यायपूर्ण सम्बन्ध कायम हों।

अगर आप सारे धार्मिक दानोंका नियमन और नियंत्रण करना चाहते हों, तो आप "राजनीतिमें धार्मिक प्रश्न दाखिल होनेका" विरोध कैसे कर सकेंगे? अिस सम्बन्धमें हम सचमुच जो करना चाहते हैं वह तो कड़ीसे कड़ी धार्मिक तटस्थताके पालनकी बात है। लेकिन जब राज्यमें प्रचलित धर्मोंके अनुयायी अपने धर्मोंमें अैसा कुछ आन्तरिक

सुधार करना चाहें, जिसके बिना प्रगति करना अुनके लिअे असंभव हो जाय, तब राज्यकी मदद लाजिमी हो जायगी।

ये कुछ बातें हैं जो आपके छपे हुअे कार्यक्रमको सरसरी निगाहसे देखने पर मुझे सूझती हैं।

विस्तृत चर्चा

[अिस विषय पर गांधीजी और समाजवादी दलके नेताओंके बीच प्रश्नोत्तरके रूपमें जो चर्चा हुअी अुसकी पूरी रिपोर्ट अिस प्रकार है:]

प्र० — समाजवादके बारेमें आपका क्या रुख है?

अु० — मैं अपनेको समाजवादी कहता हूं। यह शब्द अपने आपमें मुझे प्रिय है, लेकिन मैं अुसी समाजवादका अुपदेश नहीं करूंगा जिसका अधिकतर समाजवादी करते हैं।

प्र० — वैज्ञानिक समाजवाद, जैसा कि पश्चिममें वह समझा जाता है, के खिलाफ आपका विरोध सिद्धान्तकी दृष्टिसे बुनियादी विरोध है, या आपका विरोध भारतमें अुसे लागू करनेके खिलाफ है?

अु० — मैं नहीं जानता कि वैज्ञानिक समाजवाद क्या चीज है? लेकिन जिन समाजवादी कार्यक्रमोंको मैंने देखा है वे अगर वैज्ञानिक समाजवादका प्रतिनिधित्व करते हों, तो मेरे विचारसे अुस रूपमें वह अिस देशमें लागू करने योग्य नहीं है।

प्र० — क्या आप अुत्पादन, वितरण और विनिमयके सारे साधनोंका राष्ट्रीयकरण करनेके समाजवादी आदर्शके साथ सहमत हैं?

अु० — मैं मुख्य आधारभूत अुद्योग-धन्धोंके राष्ट्रीयकरणमें विश्वास करता हूं, जैसा कि कराची कांग्रेसके प्रस्तावमें बताया गया है। अुससे अधिक स्पष्ट अिस समय मैं कुछ नहीं देख पा रहा हूं। न मैं अुत्पादनके सारे साधनोंका राष्ट्रीयकरण ही चाहता हूं। क्या रवीन्द्रनाथ टागोरका भी राष्ट्रीयकरण किया जायगा?' ये सब बातें दिवास्वप्न जैसी हैं।

प्र० — क्या आपके विचारसे जमींदारोंके बारेमें दबावकी नीति अपनाना जरूरी नहीं है?

अु० — आपको जमींदारों और बेजमीनों — दोनोंका हृदय-परिवर्तन करना चाहिये। जमींदारोंका हृदय-परिवर्तन बेजमीनोंके हृदय-परिवर्तनसे ज्यादा आसान है; क्योंकि जमींदारोंके लिअे केवल आर्थिक हितोंका त्याग करनेका प्रश्न है, जब कि बेजमीनोंके लिअे सम्बन्ध बदलनेकी बात है। जमींदारोंसे नाराज होना बेकार है। वे भी हमारी दयाके पात्र हैं, क्योंकि अुनकी जमीन ही अुन्हें खा रही है। मेरे पास कुअी अमरीकी करोड़पति आये हैं और अुन्होंने मुझसे सुखी बननेका अुपाय पूछा है।

प्र० — क्या आप व्यक्तियोंकी दृष्टिसे बात नहीं कर रहे हैं, जब कि समाजवादी वर्गोंकी दृष्टिसे विचार करते हैं?

अु० — लेकिन आखिर वर्ग क्या चीज है? वह व्यक्तियोंका समूह ही तो है। आप जमींदारों और पूंजीपतियोंका हृदय-परिवर्तन हिंसासे नहीं बल्कि केवल समझा-बुझाकर ही कर सकते हैं। हम अुनसे कह सकते हैं कि आपको धन जमा करनेका तो अधिकार है, परन्तु आप अुस धनको मनमाने ढंगसे खर्च नहीं कर सकते। अुन्हें अपने धनके ट्रस्टी बन जाना होगा। मैं अुनसे कहूंगा: "आप पैसा कमानेकी जो क्षमता रखते हैं, अुसके लिअे आपको कमीशन लेने दिया जायगा। लेकिन आपको अन्यायपूर्ण साधनोंका त्याग कर देना चाहिये।" मैं यह देखूंगा कि वे किन साधनोंकी मददसे धन जमा करते हैं। अगर वह अन्यायसे, दूसरोंका शोषण करके, जमा किया गया होगा, तो मैं अुसे छीन लूंगा। राअुण्ड टेबल कान्फरेन्समें मैंने यह कहकर सर कावसजी जहांगीर जैसे लोगोंको भयभीत कर दिया था कि मैं जायदादके प्रत्येक अधिकार-पत्रकी जांच करूंगा।

प्र० — क्या यह बिलकुल असंभव बात नहीं है? आप जायदादके मालिकोंके लोगों मामलोंकी जांच कैसे कर सकेंगे?

अु० — मैं नमूनेके तौर पर अैसे दस जमींदारों और पूंजीपतियोंके मामलोंकी जांच करूंगा; और अगर निर्णय अुनके खिलाफ आया, तो बाकीके लोग स्वयं ही जायदाद पर अपने दावे छोड़ देंगे।

प्र० — क्या आप यह नहीं मानते कि धनी वर्गों और शोषित वर्गोंके हितका संघर्ष वर्गयुद्धका रूप ले लेगा ?

अु० — आज पूंजीपति और मजदूरके हितोंमें अिसलिअे संघर्ष है कि पूंजीपति मजदूरको कुछ भी दिये बगैर लाखों रुपयेका नफा कमानेका सपना देखता है। मैं पूंजीपतियोंको अैसा करनेसे रोक दूंगा। मैंने अहमदाबादमें खास तौर पर अुनसे कह दिया है कि अुन्हें मजदूरोंको अपने भागीदार मानना चाहिये। मैं अुनसे कहता हूं: "आप अपनी पूंजी कारखानेमें लाते हैं, मजदूर अपनी अेकमात्र पूंजीको — अपने आपको — यहां लाते हैं।" जब अहमदाबादके मिल-मालिक मजदूरोंके वेतनमें कमी करनेका प्रस्ताव लेकर मेरे पास आये तब मैंने अुनसे कह दिया: "यह सच है कि आपको अपनी पूंजी पर नफा लेनेका हक है, परन्तु सबसे पहले आपको मजदूरोंके वेतनका विश्वास दिलाना होगा।"

प्र० — लेकिन समाजवादी तो नफा कमानेके अधिकारको ही नहीं मानते ?

अु० — लेकिन क्या वे बुद्धिका अुपयोग करनेवालोंको अुनका पारितोषिक नहीं देंगे ?

प्र० — आप खानगी साहस (अुद्योग-धन्धों) और खुली होड़के जारी रहनेकी कल्पना करते हैं या राज्य द्वारा योजनाबद्ध अर्थ-रचनाकी कल्पना करते हैं ?

अु० — मेरा खानगी साहस और योजनाबद्ध अुत्पादन दोनोंमें विश्वास है। अगर केवल राज्य द्वारा ही अुत्पादन होगा तो लोग ैतिक और बौद्धिक दृष्टिसे कंगाल बन जायंगे। वे अपनी जिम्मे-ारियोंको भूल जायंगे। अिसलिअे मैं पूंजीपतियों और जमींदारोंको ाका कारखाना और अुनकी जमीन रखने दूंगा, लेकिन मैं अैसा प्रयत्न ा। जिससे वे अपने आपको अपनी जायदादके ट्रस्टी मानने लगें।

प्र० — यह आप कैसे करेंगे ?

अु० — अहिंसाके जरिये। मैं अुनका हृदय-परिवर्तन कर दूंगा। ा हृदय बदलना संभव है।

प्र० — क्या आप आर्थिक दबावको हृदय-परिवर्तनका साधन बनायेंगे ?

अु० — हां, परन्तु वह अहिंसक होगा।

प्र० — अहिंसक अिसी अर्थमें न कि आप अुनका खून नहीं बहायेंगे ?

अु० — अेक बार अगर समाजवादी अहिंसाको स्वीकार कर लेते हैं, तो अुन्हें अहिंसाके निष्णातके रूपमें मुझे स्वीकार करना ही होगा। लेकिन मैं कानूनमें मानता हूं। अुसमें दबावका तत्त्व होता जरूर है, परन्तु अुसे दूर करना संभव ही नहीं है।

प्र० — आप किसानों और मजदूरोंका संगठन किस आधार पर करना पसन्द करेंगे ?

अु० — अुनकी वर्तमान स्थितिमें सुधार करने और अुनकी शिकायतें दूर करनेके विचारसे अुनका संगठन होना चाहिये। मैं विरोध करता हूं राजनीतिक अुद्देश्योंके लिअे अुनका अुपयोग करनेका। अुदाहरणके लिअे, यह हो सकता है कि हरिजनोंके लिअे किये जानेवाले मेरे प्रयत्नोंका यह परिणाम आये कि वे राष्ट्रीय आन्दोलनका समर्थन करें, लेकिन अिस परिणामके लिअे ही मैं अुनकी ओरसे नहीं लड़ रहा हूं। अिसी तरह समाजवादियोंको मजदूरोंका संगठन ब्रिटिश साम्राज्यवादके खिलाफ अुनका अुपयोग करनेके खयालसे नहीं करना चाहिये। यही कारण है कि बम्बअीके कपड़ा-अुद्योगके मजदूरोंकी हड़तालसे मुझे खुशी नहीं होती। मैं मानता [illegible] हड़ताल अैसे लोगों द्वारा कराअी गअी है और [illegible] करते हैं जो खुद अपने लिये

प्र० — क्या आप यह नहीं मानते कि धनी वर्गों और शोषित वर्गोंके हितका संघर्ष वर्गयुद्धका रूप ले लेगा?

अु० — आज पूंजीपति और मजदूरके हितोंमें अिसलिअे संघर्ष है कि पूंजीपति मजदूरको कुछ भी दिये वगैर लाखों रुपयेका नफा कमानेका सपना देखता है। मैं पूंजीपतियोंको अैसा करनेसे रोक दूंगा। मैंने अहमदाबादमें खास तौर पर अुनसे कह दिया है कि अुन्हें मजदूरोंको अपने भागीदार मानना चाहिये। मैं अुनसे कहता हूं: "आप अपनी पूंजी कारखानेमें लाते हैं, मजदूर अपनी अेकमात्र पूंजीको — अपने आपको — यहां लाते हैं।" जब अहमदाबादके मिल-मालिक मजदूरोंके वेतनमें कमी करनेका प्रस्ताव लेकर मेरे पास आये तब मैंने अुनसे कह दिया: "यह सच है कि आपको अपनी पूंजी पर नफा लेनेका हक है, परन्तु सबसे पहले आपको मजदूरोंके वेतनका विश्वास दिलाना होगा।"

प्र० — लेकिन समाजवादी तो नफा कमानेके अधिकारको ही नहीं मानते?

अु० — लेकिन क्या वे बुद्धिका अुपयोग करनेवालोंको अुनका पारितोषिक नहीं देंगे?

प्र० — आप खानगी साहस (अुद्योग-धन्धों) और खुली होड़के जारी रहनेकी कल्पना करते हैं या राज्य द्वारा योजनाबद्ध अर्थ-रचनाकी कल्पना करते हैं?

अु० — मेरा खानगी साहस और योजनाबद्ध अुत्पादन दोनोंमें विश्वास है। अगर केवल राज्य द्वारा ही अुत्पादन होगा तो लोग नैतिक और बौद्धिक दृष्टिसे कंगाल बन जायंगे। वे अपनी जिम्मेदारियोंको भूल जायंगे। अिसलिअे मैं पूंजीपतियों और जमींदारोंको अुनका कारखाना और अुनकी जमीन रखने दूंगा, लेकिन मैं अैसा प्रयत्न करूंगा जिससे वे अपने आपको अपनी जायदादके ट्रस्टी मानने लगें।

प्र० — यह आप कैसे करेंगे?

अु० — अहिंसाके जरिये। मैं अुनका हृदय-परिवर्तन कर दूंगा। अुनका हृदय बदलना संभव है।

प्र० — क्या आप आर्थिक दबावको हृदय-परिवर्तनका साधन बनायेंगे?

अु० — हां, परन्तु वह अहिंसक होगा।

प्र० — अहिंसक अिसी अर्थमें न कि आप अुनका खून नहीं बहायेंगे?

अु० — अेक बार अगर समाजवादी अहिंसाको स्वीकार कर लेते हैं, तो अुन्हें अहिंसाके निष्णातके रूपमें मुझे स्वीकार करना ही होगा। लेकिन मैं कानूनमें मानता हूं। अुसमें दबावका तत्त्व होता जरूर है, परन्तु अुसे दूर करना संभव ही नहीं है।

प्र० — आप किसानों और मजदूरोंका संगठन किस आधार पर करना पसन्द करेंगे?

अु० — अुनकी वर्तमान स्थितिमें सुधार करने और अुनकी शिकायतें दूर करनेके विचारसे अुनका संगठन होना चाहिये। मैं विरोध करता हूं राजनीतिक अुद्देश्योंके लिअे अुनका अुपयोग करनेका। अुदाहरणके लिअे, यह हो सकता है कि हरिजनोंके लिअे किये जाने-वाले मेरे प्रयत्नोंका यह परिणाम आये कि वे राष्ट्रीय आन्दोलनका समर्थन करें, लेकिन अिस परिणामके लिअे ही मैं अुनकी ओरसे नहीं लड़ रहा हूं। अिसी तरह समाजवादियोंको मजदूरोंका संगठन ब्रिटिश साम्राज्यवादके खिलाफ अुनका अुपयोग करनेके खयालसे नहीं करना चाहिये। यही कारण है कि बम्बअीके कपड़ा-अुद्योगके मजदूरोंकी हड़तालसे मुझे खुशी नहीं होती। मैं मानता हूं कि यह हड़ताल अैसे लोगों द्वारा कराअी गअी है और अैसे लोग अुसका नेतृत्व करते हैं, जो खुद अपने लिअे राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं।

प्र० — क्या आप मजदूरोंसे अैसा कहना ठीक नहीं मानते कि जिसके खिलाफ वे सचमुच लड़ रहे हैं वह साम्राज्यवादकी पद्धति है और जब तक वह पद्धति कायम रहेगी तब तक अुनकी हालत सुधर नहीं सकती?

अु० — हां। फिलहाल तो मजदूरोंको सिर्फ यही सिखाना चाहिये कि वे मिल-मालिकों पर अपनी अिच्छाका दबाव डालें। अिसमें

सरकारको भी शामिल करनेका मतलब होगा अपनी बातको साबित करनेके लिअे अतिशयोक्ति करना। सरकार चाहे जो हो, यहां तक कि खुद आपकी पूंजीवादी सरकार भी, मिल-मालिकोंकी मदद करेगी। आजकी अिस साम्राज्यवादी पद्धतिमें भी मैं मजदूरोंको अुनकी शक्तिका अुपयोग करना और पूंजीपतियोंके साथ भागीदारीका दावा करना सिखा सकता हूं। मैं अुनसे कहूंगा कि वे मिलों पर अधिकार कर लें।

प्र० — परन्तु जब तक साम्राज्यवादी सरकार है तब तक अैसा करना असंभव है।

अु० — राज्यके नियंत्रणके बिना भी राष्ट्रीयकरण हो सकता है। मैं मजदूरोंके भलेके लिअे अेक मिल शुरू कर सकता हूं।

प्र० — समाजवादी अिसे 'आदर्श स्थिति कहेंगे। क्या आप जानते हैं कि तीसरी आन्तर-राष्ट्रीय (समाजवादी) परिषद यह मानती है कि समाजवादको किसी अेक देशमें स्थापित करना संभव नहीं है — अेक अुद्योग या अेक मिलमें तो अुसकी और भी कम संभावना है।

अु० — तीसरी आन्तर-राष्ट्रीय परिषदकी महत्त्वाकांक्षा चंगेज-खांके जैसी है; भेद अितना ही है कि अेक महत्त्वाकांक्षा सामूहिक है, जब कि दूसरी वैयक्तिक थी।

प्र० — भारतके राजा-महाराजाओंके शासनका खातमा करनेकी समाजवादी मांगके बारेमें आपकी क्या राय है?

अु० — मैं अुसके साथ सहमत नहीं हूं। अुन्हें चाहिये कि वे राजा-महाराजाओंको वैध शासक बनानेका या प्रजाकी अिच्छाओंके अनुसार शासन चलानेवाले लोकनेता बनानेका प्रयत्न करें। अुनके शासनके, अन्तकी मांग करनेका अर्थ अफगानिस्तानमें समाजवादकी स्थापनाकी मांग करने जैसा होगा।

प्र० — लेकिन यह तो निश्चित है कि शुद्ध अुपयोगिताकी दृष्टिके सिवा हमें देशके ब्रिटिश भारत और भारतीय भारत जैसे कृत्रिम विभाजनको स्वीकार नहीं करना चाहिये?

अु० — यह अैसी अुपयोगिता है जिसने लगभग सिद्धान्तका ५ ले लिया है। विभाजन तो हो ही चुका है; भले हम अुसे

पसन्द करें या न करें। अगर हम ब्रिटिश भारत पर अपनी बातका प्रभाव डाल सके, तो देशी राज्यों पर भी अुसका असर होगा। चूंकि साम्यवाद दूसरे देशोंमें अपने आपको फैलानेमें विश्वास रखता है, अिसलिअे अुसके भीतर ही अुसके नाशके बीज समाये हुअे हैं। हम लोगोंको समझा-बुझाकर राजी तो कर सकते हैं, परन्तु अुन्हें साम्यवाद स्वीकार करनेके लिअे मजबूर नहीं कर सकते। अगर यह काम लोगोंको राजी करके किया जा सके तो अच्छी बात है, परन्तु दबाव, प्रचार और आर्थिक सहायताका समर्थन नहीं किया जा सकता। अपनी शक्तिसे बिलकुल बाहरका कोअी काम करनेकी बात कहनेका अर्थ होगा राजाओंको बिना कारण अपने शत्रु बना लेना।

प्र० — कांग्रेस समाजवादी दलने कांग्रेसके लिअे जो कार्यक्रम पेश किया है, अुसके बारेमें आपकी सामान्य टीका क्या है?

अु० — वह मानव-स्वभावमें अविश्वास प्रकट करता है। अुसकी सारी भूमिका ही गलत है।

प्र० — क्या आप अैसा नहीं मानते कि जिस लड़ाअीमें ब्रिटेन शरीक हो, अुसमें भारतके शरीक होनेका सक्रिय विरोध करना कांग्रेसके कार्यक्रमका अेक अंग होना चाहिये?

अु० — लड़ाअीका विरोध करनेके खातिर आपको मरनेके लिअे तैयार होना चाहिये, परन्तु आम जनताको अैसे विरोधके लिअे तैयार करना समाजवादियोंका कर्तव्य नहीं है। अेक नअी पार्टीको छलांग मारनेके पहले आगे देख लेना चाहिये। अुसे सावधानीसे कदम रखना चाहिये।

प्र० — क्या रेल-कामगारों, जहाज-गोदामके मजदूरों, टेलीफोनके कर्मचारियों और युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाले मजदूरोंकी आम हड़ताल करवा कर लड़ाअीका विरोध नहीं किया जाना चाहिये?

अु० — करना चाहिये। लड़ाअी शुरू होने पर हड़ताल होनी चाहिये, लेकिन अभीसे अपने अिरादे हमें जाहिर नहीं करने चाहिये।

प्र० — लेकिन आपकी पद्धति तो हमेशा विरोधीको नोटिस देनेकी रही है?

अु०—जो काम मैं भविष्यमें करना चाहता हूं अुसका नोटिस मुझे क्यों देना चाहिये ?

प्र०—तब देशको लड़ाअीका विरोध करनेके लिअे तैयार करनेके खातिर आप क्या कार्यक्रम सुझाते हैं ?

अु०—जनता पर कांग्रेसका प्रभाव अपने आपमें ही लड़ाअीके विरोधकी तैयारी है। अिसी प्रकार अगर समाजवादी अिस समय जनता पर अपना प्रभाव जमा दें, तो समय आने पर लोग अुनकी बात सुनेंगे।

४

जयप्रकाशकी तसवीर

श्री जयप्रकाश नारायणने मेरे पास अेक प्रस्तावका नीचे लिखा मसविदा भेजा था, और मुझे लिखा था कि अगर मैं अिस प्रस्तावमें दी गअी तसवीरसे सहमत होअूं, तो अिसे रामगढ़में होनेवाली कांग्रेस कार्य-समितिके सामने पेश कर दूं। प्रस्ताव अिस प्रकार था:

> "कांग्रेस और देशके सामने आज अेक महान राष्ट्रीय अुथल-पुथलका अवसर अुपस्थित है। आजादीकी आखिरी लड़ाअी जल्द ही लड़ी जानेवाली है, और यह सब अैसे समय हो रहा है जब महान शक्तिशाली परिवर्तनोंके द्वारा सारा संसार जड़से हिलाया जा रहा है। दुनियाभरके विचारक लोग आज अिस बातके लिअे चिंतित हैं कि अिस यूरोपीय युद्धके महानाशमें से अेक अैसी नयी दुनियाका जन्म हो, जिसकी जड़ राष्ट्रों-राष्ट्रों और मनुष्यों-मनुष्योंके बीचके सद्‌भावपूर्ण सहयोग पर कायम की गअी हो। अैसे समय कांग्रेस स्वतंत्रताके अपने अुन आदर्शोंको निश्चित रूपसे व्यक्त कर देना आवश्यक समझती है, जिन पर कि वह अड़ी हुअी है और जिनके लिअे वह जल्दी ही देशकी जनताको अधिकसे अधिक कष्ट सहनेका न्योता देनेवाली है।

"स्वतंत्र भारतीय राष्ट्रका काम होगा कि वह राष्ट्रोंके बीच शान्तिकी स्थापना करे, सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरणके लिअे यत्नशील रहे और राष्ट्रीय झगड़ोंको किसी स्वतंत्रतापूर्वक स्थापित आन्तर-राष्ट्रीय सत्ता द्वारा शान्तिपूर्वक निबटानेकी कोशिश करे। वह खास तौर पर अपने पड़ोसी देशोंके साथ, फिर वे महान शक्तिशाली साम्राज्य हों या छोटे-छोटे राष्ट्र, मित्र बनकर रहनेका यत्न करेगा और किसी भी विदेशी राज्य या प्रदेश पर अपना अधिकार जमानेकी अिच्छा न करेगा।

"देशके सभी कायदे-कानून सर्व-साधारण जनता द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त की गअी अिच्छाके अनुसार बनाये जायेंगे; और देशमें शान्ति और सुव्यवस्था कायम रखनेका अन्तिम आधार जन-साधारणकी स्वीकृति और सम्मति पर ही रहेगा।

"स्वतंत्र भारतीय राष्ट्रमें जनताको सम्पूर्ण व्यक्तिगत और नागरिक स्वतंत्रता होगी और सांस्कृतिक तथा धार्मिक मामलोंमें पूरी आजादी दी जायेगी। पर अिसका यह मतलब नहीं होगा कि हिन्दुस्तानकी जनता अपनी संविधान-सभा द्वारा अपने लिअे जो शासन-विधान तैयार करेगी, अुसको हिंसा द्वारा अुलट देनेकी आजादी किसीको रहेगी।

"देशकी राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रके नागरिकोंके बीच किसी प्रकारका भेदभाव न रखेगी। प्रत्येक नागरिकको समान अधिकार रहेंगे। जन्म और परम्पराके कारण मिलनेवाली सभी सुविधायें या भेदभाव मिटा दिये जायेंगे। न तो सरकार द्वारा किसीको कोअी पद या अुपाधि दी जायगी और न परम्परागत सामाजिक दरजेके कारण ही कोअी किसी अुपाधिका हकदार माना जायगा।

"राज्यका राजनीतिक और आर्थिक संगठन सामाजिक न्याय और आर्थिक स्वतंत्रताके सिद्धांतों पर किया जायेगा। अिस संगठनके फलस्वरूप जहां समाजके प्रत्येक व्यक्तिकी राष्ट्रीय आवश्यकताओंकी पूर्ति होगी, तहां अिसका अुद्देश्य केवल

भौतिक आवश्यकताओंकी तृप्ति ही न रहेगा, बल्कि अपेक्षा यह रखी जायेगी कि जिसके कारण राष्ट्रका हरअेक व्यक्ति स्वास्थ्यपूर्ण जीवन बिता सके और अपना नैतिक तथा बौद्धिक विकास कर सके। अिसके लिअे और समाजमें समताकी भावना स्थापित करनेके लिअे राज्य द्वारा छोटे पैमाने पर चलनेवाले अैसे अुद्योग-धंधोंको प्रोत्साहित किया जायेगा, जो व्यक्तियों द्वारा या सहकारी संस्थाओं द्वारा सभीके समान हितकी दृष्टिसे चलाये जायेंगे। बड़े पैमाने पर सामूहिक रूपसे चलनेवाले सभी अुद्योग-धंधोंको अन्तमें जाकर अिस तरह चलाना होगा कि जिससे अुनका अधिकार और आधिपत्य व्यक्तियोंके हाथसे निकलकर समाजके हाथमें आ जाये। अिस लक्ष्यकी सिद्धिके लिअे राज्य यातायातके भारी साधनों, व्यापारी जहाजों, खानों और दूसरे बड़े-बड़े अुद्योग-धंधोंका राष्ट्रीयकरण शुरू कर देगा। वस्त्र-व्यवसायका प्रबंध अिस तरह किया जायेगा कि जिससे अुत्तरोत्तर अुसका केन्द्रीकरण रुके और विकेन्द्रीकरण बढ़े।

"गांवोंके जीवनका पुनःसंगठन किया जायेगा, अुन्हें स्वतंत्र शासित अिकाअी बनाया जायेगा और जहां तक संभव होगा अधिकसे अधिक स्वावलम्बी बनानेका यत्न किया जायेगा। देशके जमीन-संबंधी कानूनोंमें जड़-मूलसे सुधार किया जायेगा, और यह सुधार अिस सिद्धांत पर होगा कि जमीनका मालिक अुसे जोतनेवाला ही हो सकता है। और हर काश्तकारके पास अुतनी ही जमीन होनी चाहिये, जितनीसे वह अपने परिवारका अुचित रीतिसे भरण-पोषण कर सके। अिससे जहां अेक ओर जमींदारीकी अनेक प्रथायें बन्द हो जायेंगी, तहां खेतीमें गुलामीकी प्रथा भी नष्ट हो जायेगी।

"राज्य वर्गोंके हितों या स्वार्थोंकी रक्षा करेगा। लेकिन जब ये स्वार्थ गरीबों या पद-दलितोंके स्वार्थमें बाधक होंगे, तो राज्य गरीबों और पद-दलितोंके स्वार्थकी रक्षा करके सामाजिक न्यायकी तुलाको समतोल रखेगा।

"राज्यकी मालिकीवाले और राज्यकी व्यवस्थामें चलनेवाले सभी अुद्योग-धन्धोंके प्रबंधमें मजदूरोंको अपने चुने हुअे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार रहेगा और अिस प्रबंधमें अुनका हिस्सा सरकारके प्रतिनिधियोंके बराबर होगा।

"देशी राज्योंमें सम्पूर्ण प्रजातंत्रात्मक सरकारें स्थापित होंगी और नागरिकोंकी समताके तथा सामाजिक भेदभावको मिटानेके सिद्धांतके अनुसार राजाओं और नवाबोंके रूपमें देशी रियासतोंमें कोअी नामधारी शासक नहीं रहेंगे।"

मुझे श्री जयप्रकाशका यह प्रस्ताव पसन्द आया और मैंने कार्य-समितिको अुनका पत्र और प्रस्तावका यह मसविदा पढ़कर सुनाया। लेकिन समितिने यह सोचा कि रामगढ़ कांग्रेसमें अेक ही प्रस्ताव पास करनेकी बात पर डटे रहना जरूरी है, और पटनामें जो मूल प्रस्ताव पास हुआ था अुसमें किसी प्रकारका परिवर्तन करना अिष्ट नहीं है। समितिकी यह दलील निरपवाद थी, अिसलिअे प्रस्तुत प्रस्तावके गुण-दोषोंकी चर्चा किये बिना ही अुसे छोड़ दिया गया। मैंने श्री जयप्रकाशको अपने प्रयत्नके परिणामसे सूचित कर दिया। अुन्होंने मुझे लिखा कि अिसके बाद अुनको संतोष देनेवाली सबसे अच्छी बात यह होगी कि मैं अुनके अिस प्रस्तावको अपनी पूरी सहमति या जितनी मैं दे सकूं अुतनी सहमतिके साथ प्रकाशित कर दूं।

श्री जयप्रकाशकी अिस अिच्छाको पूरा करनेमें मुझे कोअी कठिनाअी नहीं मालूम होती। अेक अैसे आदर्शके नाते, जिसे देशके स्वतंत्र होते ही हमें कार्यरूपमें परिणत करना है, मैं श्री जयप्रकाशकी अेक सूचनाको छोड़कर शेष सभी सूचनाओंका आम तौर पर समर्थन करता हूं।

मेरा दावा है कि आज हिन्दुस्तानमें जो लोग समाजवादको अपना ध्येय मानते हैं, अुनसे बहुत पहले मैं समाजवादको स्वीकार कर चुका था। लेकिन मेरा समाजवाद मेरे लिअे सहज और स्वाभाविक था, वह पुस्तकोंसे ग्रहण नहीं किया गया था। वह अहिंसामें मेरे

अटल विश्वासका ही परिणाम था। कोअी भी आदमी, जो सक्रिय अहिंसामें विश्वास करता है, सामाजिक अन्यायको, फिर वह कहीं भी क्यों न होता हो, बरदाश्त नहीं कर सकता — वह अुसका विरोध किये बिना रह नहीं सकता। जहां तक मैं जानता हूं, दुर्भाग्यवश पश्चिमके समाजवादियोंने यह मान लिया है कि अपने समाजवादी सिद्धांतोंको वे हिंसा द्वारा ही अमलमें ला सकते हैं।

मैं सदासे यह मानता आया हूं कि नीचसे नीच और कमजोरसे कमजोरके प्रति भी हम जोर-जबरदस्तीके जरिये सामाजिक न्यायका पालन नहीं कर सकते। मैं यह भी मानता आया हूं कि पतितसे पतित लोगोंको भी सही तालीम दी जाये, तो अहिंसक साधनों द्वारा सब प्रकारके अत्याचारोंका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही अुसका मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अुतना ही कर्तव्य-रूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी बरबादी या गुलामीमें खुद सहायक होनेके लिअे कोअी बंधा हुआ नहीं है। जो स्वतंत्रता दूसरोंके प्रयत्नों द्वारा — फिर वे कितने ही अुदार क्यों न हों — मिलती है, वह अुन प्रयत्नोंके न रहने पर कायम नहीं रखी जा सकती। दूसरे शब्दोंमें, अैसी स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं है। लेकिन जब पतितसे पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी कला सीख लेते हैं, तो वे अुसके प्रकाशका अनुभव किये बिना नहीं रह सकते।

असलिअे जब मैंने श्री जयप्रकाशके अिस प्रस्तावको पढ़ा और देखा कि वे देशमें जिस प्रकारकी शासन-व्यवस्था कायम करना चाहते हैं, अुसका आधार अुन्होंने अहिंसाको ही माना है तो मुझे खुशी हुअी। मेरा यह पक्का विश्वास है कि जिस चीजको हिंसा कभी नहीं कर सकती, वही अहिंसात्मक असहयोग द्वारा सिद्ध की जा सकती हैं; और अुससे अन्तमें जाकर अत्याचारियोंका हृदय-परिवर्तन भी हो सकता है। हमने हिन्दुस्तानमें अहिंसाको अुसके अनुरूप अवसर अभी तक दिया ही नहीं है। फिर भी आश्चर्य है कि अपनी अिस मिलावटी अहिंसा द्वारा भी हमने अितनी शक्ति प्राप्त कर ली है।

जमीनके बारेमें श्री जयप्रकाशकी सूचनायें भड़कानेवाली हो सकती हैं; लेकिन वे दरअसल वैसी हैं नहीं। प्रतिष्ठित जीवनके लिअे जितनी जमीनकी आवश्यकता है, अुससे अधिक किसी आदमीके पास नहीं होनी चाहिये। अैसा कौन है जो अिस हकीकतसे अिनकार कर सके कि आम जनताकी घोर गरीबीका मुख्य कारण आज यही है कि अुनके पास अुनकी अपनी कही जानेवाली कोअी जमीन नहीं है?

लेकिन यह याद रखना चाहिये कि अिस तरहके सुधार तोड़-फोड़ नहीं किये जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरीकोंसे करने हैं, तो धनिकों और निर्धनों दोनोंको सुशिक्षित बनाना लाजिमी हो जाता है। धनिकोंको यह विश्वास दिलाना होगा कि अुनके साथ कभी जोर-जबरदस्ती नहीं की जायेगी; और निर्धनोंको यह सिखाना और समझाना होगा कि अुनकी मरजीके खिलाफ अुनसे जबरन कोअी काम नहीं ले सकता, और कष्ट-सहन या अहिंसाकी कलाको सीखकर वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। अगर अिस लक्ष्यको हमें प्राप्त करना है, तो अूपर मैंने जिस शिक्षाका जिक्र किया है अुसका प्रारंभ अभीसे हो जाना चाहिये। अिसके लिअे पहली जरूरत अैसा वातावरण तैयार करनेकी है, जिसमें पारस्परिक आदर और सद्भावका साम्राज्य हो। अुस अवस्थामें वर्गों और आम जनताके बीच किसी प्रकारका कोअी हिंसात्मक संघर्ष नहीं हो सकता।

अिसलिअे यद्यपि अहिंसाकी दृष्टिसे श्री जयप्रकाशकी सूचनाओंका सामान्य समर्थन करनेमें मुझे कोअी कठिनाअी नहीं मालूम होती, तो भी मैं राजाओं सम्बन्धी अुनकी सूचनाका समर्थन नहीं कर सकता। कानूनकी दृष्टिसे वे स्वतंत्र हैं। यह सच है कि अुनकी स्वतंत्रताका कोअी विशेष मूल्य नहीं है, क्योंकि अेक प्रबल शक्ति अुनका संरक्षण करती है। लेकिन वे अपनी स्वतंत्रताका दावा कर सकते हैं, जब कि हम नहीं कर सकते। श्री जयप्रकाशकी प्रस्तावित सूचनाओंमें जो बातें कही गअी हैं, अुनके अनुसार अगर अहिंसात्मक साधनों द्वारा हम स्वतंत्र हो जायें, तो अुस हालतमें मैं अैसे किसी समझौतेकी कल्पना नहीं कर सकता, जिसमें राजा लोग अपनेको खुद ही मिटानेके लिअे

तैयार होंगे। समझौता किसी भी तरहका क्यों न हो, राष्ट्रको अुसका पूरा-पूरा पालन करना ही होगा। अिसलिअे मैं तो सिर्फ अैसे समझौतेकी ही कल्पना कर सकता हूं, जिसमें वड़ी-वड़ी रियासतें अपने दरजेको कायम रखेंगी। अेक तरहसे वह चीज आजकी स्थितिसे कहीं वढ़कर होगी, लेकिन दूसरी दृष्टिसे राजाओंकी सत्ता अितनी सीमित रह जायेगी कि जिससे देशी रियासतोंकी प्रजाको अपनी रियासतोंमें स्वायत्त शासनके वे ही अधिकार प्राप्त रहेंगे, जो हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंकी जनताको प्राप्त रहेंगे। अुनको भाषण, लेखन तथा मुद्रणकी स्वतंत्रता और शुद्ध न्याय प्राप्त रहेगा। शायद श्री जयप्रकाशको यह विश्वास नहीं है कि राजा लोग स्वेच्छासे अपनी निरंकुशताका त्याग कर देंगे। मुझे यह विश्वास है। अेक तो अिसलिअे कि वे भी हमारी ही तरह भले आदमी हैं और दूसरे अिसलिअे कि मेरा शुद्ध अहिंसाकी अमोघ शक्तिमें सम्पूर्ण विश्वास है। अतः अन्तमें मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या राजा-महाराजा और क्या दूसरे लोग सभी सच्चे और अनुकूल वन जायेंगे, तव हम खुद अपने प्रति, अपनी श्रद्धाके प्रति — यदि हममें श्रद्धा है — और राष्ट्रके प्रति सच्चे वनेंगे। अिस समय तो हममें अैसा वननेकी पूरी श्रद्धा नहीं है। अैसी अधकचरी श्रद्धासे स्वतंत्रताका मार्ग कभी नहीं प्राप्त किया जा सकता। अहिंसाका प्रारंभ और अन्त आत्म-निरीक्षणमें होता है — 'जिन खोजा तिन पाअियां गहरे पानी पैठ।'

हरिजनसेवक, २०–४–'४०

५

गरीबी और अमीरी

रोजकी जरूरत जितना ही रोज पैदा करनेका ओश्वरका नियम हम नहीं जानते या जानते हुअे भी पालते नहीं हैं। अिसलिअे जगतमें असमानता और अुससे पैदा होनेवाले दुःख हम भुगतते हैं। अमीरके यहां अुसे नहीं चाहिये वैसी चीजें भरी पड़ी होती हैं, जो लापरवाहीसे खो जाती हैं, बिगड जाती हैं; जब कि अिन्हीं चीजोंकी कमीके कारण करोड़ों लोग यहां-वहां भटकते हैं, भूखों मरते हैं, ठंडसे ठिठुर जाते हैं। सब अगर अपनी जरूरतकी चीजोंका ही संग्रह करें, तो किसीको तंगी महसूस न हो और सबको संतोष हो। आज तो दोनों ही तंगी महसूस करते हैं। करोडपति अरबपति होना चाहता है, फिर भी अुसको संतोष नहीं होता। कंगाल करोडपति होना चाहता है; कंगालको भरपेट ही मिलनेसे संतोष होता हो अैसा नहीं देखा जाता। फिर भी अुसे भरपेट पानेका हक है, और अुसे अुतना पाने योग्य बनाना समाजका फर्ज है। अिसलिअे अुसके (गरीबके) और अपने संतोषके खातिर अमीरको अिस दिशामें पहल करनी चाहिये। अगर वह अपना जरूरतसे ज्यादा परिग्रह छोडे तो कंगालको अपनी जरूरतका आसानीसे मिल जाय और दोनों पक्ष संतोषका सबक सीखें।

मंगल-प्रभात, पृष्ठ २९-३०, १९५८

हम सब लोगोंको जायदाद क्यों रखनी चाहिये? हम जायदादको कुछ अरसे तक रखनेके बाद छोड़ क्यों न दें? धर्माधर्मका जिन्हें खयाल नहीं होता अैसे व्यापारी अनीतिपूर्ण हेतुओंके लिअे अैसा करते हैं, तो फिर हम अेक बड़े और नीतियुक्त हेतुको हासिल करनेके लिअे अैसा क्यों न करें? हिन्दुओंके लिअे अेक खास अवस्थामें पहुंचनेके बाद अैसा करना मामूली बात थी। प्रत्येक हिन्दूसे यह आशा रखी जाती है कि अेक अरसे तक गृहस्थाश्रममें रहनेके बाद वह वैसा ही

जीवन अपनाये, जिसमें जायदाद पास नहीं रखी जाती। यह पुरानी सुन्दर प्रथा हम फिरसे ताजी क्यों न करें? परिणाममें अिसका मतलब सिर्फ अितना ही होता है कि हम जीवन-निर्वाहके लिअे अुनकी दया पर निर्भर रहते हैं, जिन्हें हमने अपनी सारी जायदाद सौंप दी है। यह विचार मेरे दिलको बड़ा आकर्षक मालूम होता है। अैसे विश्वासके लाखों अुदाहरणोंमें अैसा अेक भी दृष्टांत मुश्किलसे ही मिलेगा, जिसमें विश्वासका दुरुपयोग हुआ हो। . . . अप्रामाणिक व्यक्तियोंको अिसका दुरुपयोग करनेका मौका न देकर यह प्रथा किस तरह व्यवहारमें लाअी जा सकती है, अिसका निर्णय तो अेक बड़े अरसेके अनुभवके बाद ही हो सकता है। फिर भी अिस खयालसे कि अुसका दुरुपयोग होगा, किसीको अिसका प्रयोग करनेके प्रयत्नसे रुकना न चाहिये। गीताके दिव्य कर्ता 'दिव्य गीता'का संदेश देनेसे न रुके, यद्यपि शायद वे जानते थे कि सब प्रकारकी बुराअियोंको — यहां तक कि हत्याको न्यायसंगत ठहरानेके लिअे भी — अिस सन्देशको खूब तोड़ा-मरोड़ा जायेगा।

हिन्दी नवजीवन, ६–७–'२४

मैं कहना चाहता हूं कि हम सब अेक तरहसे चोर हैं। अगर मैं कोअी अैसी चीज लेता हूं और रखता हूं, जिसकी मुझे अपने किसी तात्कालिक अुपयोगके लिअे जरूरत नहीं है, तो मैं किसी दूसरेसे अुसकी चोरी ही करता हूं। . . . यह प्रकृतिका अेक निरपवाद बुनियादी नियम है कि वह रोज केवल अुतना ही पैदा करती है जितना हमें चाहिये और यदि हरअेक आदमी जितना अुसे चाहिये अुतना ही ले, ज्यादा न ले, तो दुनियामें गरीबी न रहे और कोअी आदमी भूखा न मरे। . . . मैं समाजवादी नहीं हूं और जिनके पास सम्पत्तिका संचय है अुनसे मैं अुसे छीनना नहीं चाहूंगा। लेकिन मैं यह जरूर कहता हूं कि हममें से जो लोग व्यक्तिगत रूपसे प्रकाशकी खोजमें लगे हुअे हैं, अुन्हें अिस नियमका पालन करना चाहिये। मैं किसीसे अुसकी सम्पत्ति छीनना नहीं चाहता, क्योंकि वैसा करूं तो

में अहिंसाके नियमसे च्युत हो जाअूंगा। यदि किसीके पास मुझसे ज्यादा सम्पत्ति है तो भले रहे। लेकिन यदि मुझे अपना जीवन अिस नियमके अनुसार गढ़ना है, तो में अैसी कोअी चीज अपने पास नहीं रख सकता जिसकी मुझे जरूरत नहीं है। भारतमें लाखों लोग अैसे हैं जिन्हें दिनमें केवल अेक ही बार खाकर सन्तोष कर लेना पड़ता है; और अुनके अुस भोजनमें भी सूखी रोटी और चुटकीभर नमकके सिवा और कुछ नहीं होता। हमारे पास जो कुछ भी है अुस पर हमारा और आपका तब तक कोअी अधिकार नहीं है जब तक अिन लोगोंके पास पहननेके लिअे पूरा कपड़ा और खानेके लिअे पूरा अन्न नहीं हो जाता। हममें और आपमें ज्यादा समझ होनेकी आशा की जाती है। अतः हमें अपनी जरूरतोंका नियमन करना चाहिये और स्वेच्छापूर्वक अमुक अभाव भी सहना चाहिये, जिससे अुन गरीबोंका पालन-पोषण हो सके, अुन्हें पूरा कपड़ा और अन्न मिल सके।

स्पीचेज़ अेन्ड राजिटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ३८४–८५

सुनहला नियम तो यह है कि जो चीज लाखों लोगोंको नहीं मिल सकती, अुसे लेनेसे हम भी दृढ़तापूर्वक अिनकार कर दें। त्यागकी यह शक्ति हमें कहींसे अेकाअेक नहीं मिल जायेगी। पहले तो हमें अैसी मनोवृत्ति पैदा करनी चाहिये कि हमें अुन सुख-सुविधाओंका अुपयोग नहीं करना है जिनसे लाखों लोग वंचित हैं। और अुसके बाद तुरन्त ही अपनी अिस मनोवृत्तिके अनुसार हमें अपना जीवन बदलनेमें शीघ्रतासे लग जाना चाहिये।

यंग अिंडिया, २४–६–'२६

प्रत्येक महल, जिसे हम भारतमें देखते हैं, भारतकी दौलतका चिह्न नहीं है। वह अुस सत्ताके मदका चिह्न है, जो दौलत कुछेक लोगोंको देती है। अिन कुछेक लोगोंके हाथमें वह दौलत भारतके लाखों गरीबोंकी सुस कड़ी मेहनतके बल पर आती है, जिसका अुन्हें बहुत ही कम बदला चुकाया जाता है।

यंग अिंडिया, २८–४–'२७

मैं अिस रायके साथ निःसंकोच अपनी सम्मति जाहिर करता हूं कि आम तौर पर धनवान — केवल धनवान ही क्यों, ज्यादातर लोग — अिस बातका विचार नहीं करते कि वे पैसा किस तरह कमाते हैं। अहिंसक अुपायका प्रयोग करते हुअे यह विश्वास तो होना ही चाहिये कि कोअी आदमी कितना ही पतित क्यों न हो, यदि कुशलता और सहानुभूतिसे अुसके साथ व्यवहार किया जाय तो अुसे सुधारा जा सकता है। हमें मनुष्योंमें रहनेवाले दैवी अंशको प्रभावित करना चाहिये और अपेक्षा रखनी चाहिये कि अुसका अनुकूल परिणाम निकलेगा। यदि समाजका हरअेक सदस्य अपनी शक्तियोंका अुपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ साधनेके लिअे नहीं बल्कि सबके कल्याणके लिअे करे, तो क्या अिससे समाजकी सुख-समृद्धिमें वृद्धि नहीं होगी? हम अैसी जड़ समानताका निर्माण नहीं करना चाहते, जिसमें कोअी आदमी अपनी योग्यताओंका पूरा-पूरा अुपयोग कर ही न सके। अैसा समाज अन्तमें नष्ट हुअे बिना नहीं रह सकता। अिसलिअे मेरी यह सलाह बिलकुल सही है कि धनवान लोग चाहे करोड़ों रुपये कमायें (बेशक अीमानदारीसे ही), लेकिन अुनका अुद्देश्य सारा पैसा सबके कल्याणमें समर्पित कर देनेका होना चाहिये। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' मंत्रमें असाधारण ज्ञान भरा पड़ा है। आजकी जीवन-पद्धतिकी जगह, जिसमें हरअेक आदमी पड़ोसीकी परवाह किये बिना केवल अपने ही लिअे जीता है, सबका कल्याण करनेवाली नयी जीवन-पद्धतिका विकास करना हो, तो अुसका सबसे निश्चित मार्ग यही है।

हरिजन, २२–२–'४२

६

आर्थिक समानता

समाजकी मेरी कल्पना यह है कि हम पैदा तो समान होते हैं, अर्थात् हम सबको समान अवसर पानेका हक है, परन्तु हम सबकी क्षमता या शक्ति अेकसी नहीं होती। प्रकृतिकी रचना ही अैसी है कि क्षमता अेकसी हो ही नहीं सकती। अुदाहरणके लिअे, सबकी अेकसी अूंचाअी, अेकसा रंग या सबमें बुद्धि आदिकी अेकसी मात्रा नहीं हो सकती। अिसलिअे कुदरतन् ही कुछ लोगोंकी कमानेकी योग्यता अधिक होगी और दूसरोंकी थोड़ी। बुद्धिशाली लोगोंकी योग्यता अधिक होगी और वे अपनी बुद्धिका अिस कामके लिअे अुपयोग करेंगे। यदि वे अुपकारकी भावना रखकर अपनी बुद्धिका अुपयोग करें तो राज्यका ही काम करेंगे। अैसे लोग संरक्षक बनकर रहते हैं, और किसी भी रूपमें नहीं। मैं बुद्धिशाली आदमीको अधिक कमाने दूंगा, अुसकी बुद्धिको कुंठित नहीं करूंगा। परन्तु अुसकी अधिकांश कमाअी राज्यकी भलाअीके लिअे वैसे ही काम आनी चाहिये, जैसे कि बापके सारे कमाअू बेटोंकी आमदनी परिवारके कोषमें जमा होती है। वे अपनी कमाअीके संरक्षक बनकर ही रहेंगे।

यंग अिंडिया, २६–११–'३१

मैं अैसी स्थिति लाना चाहता हूं, जिसमें सबका सामाजिक दरजा समान माना जाय। मजदूरी करनेवाले वर्गोंको सैकड़ों वर्षोंसे सभ्य समाजसे अलग रखा गया है और अुन्हें नीचा दरजा दिया गया है। अुन्हें शूद्र कहा गया है और अिस शब्दका यह अर्थ किया गया है कि वे दूसरे वर्गोंसे नीचे हैं। मैं बुनकर, किसान और शिक्षकके लड़कोंमें कोअी भेद नहीं होने दूंगा।

हरिजन, १५–१–'३८

रचनात्मक कामका यह अंग अहिंसापूर्ण स्वराज्यकी मुख्य चावी है। आर्थिक समानताके लिअे काम करनेका मतलव है, पूंजी और मजदूरीके वीचके झगड़ोंको हमेशाके लिअे मिटा देना। अिसका अर्थ यह होता है कि अेक ओरसे जिन मुट्ठीभर पैसेवाले लोगोंके हाथमें राष्ट्रकी संपत्तिका वड़ा भाग अिकट्ठा हो गया है, अुनकी संपत्तिको कम करना; और दूसरी ओरसे जो करोड़ों लोग अधपेट खाते और नंगे रहते हैं, अुनकी संपत्तिमें वृद्धि करना। जव तक मुट्ठीभर धनवानों और करोड़ों भूखे रहनेवालोंके वीच भारी अन्तर वना रहेगा, तव तक अहिंसाकी वुनियाद पर चलनेवाली राज-व्यवस्था कायम नहीं हो सकती। आजाद हिन्दुस्तानमें देशके वड़ेसे वड़े धनवानोंके हाथमें हुकूमतका जितना हिस्सा रहेगा, अुतना ही गरीवोंके हाथमें भी होगा; और तव नअी दिल्लीके महलों और अुनकी वगलमें वसी हुअी गरीव मजदूर वस्तियोंके टूटे-फूटे झोंपड़ोंके वीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है, वह अेक दिनको भी नहीं टिकेगा। अगर धनवान लोग अपने धनको और अुसके कारण मिलनेवाली सत्ताको खुद राजी-खुशीसे छोड़कर और सवके कल्याणके लिअे सवके साथ मिलकर वरतनेको तैयार न होंगे, तो यह तय समझिये कि हमारे देशमें हिंसक और खूनी क्रांति हुअे विना न रहेगी।

ट्रस्टीशिप या सरपरस्तीके मेरे सिद्धान्तका वहुत मजाक अुड़ाया गया है, फिर भी मैं अुस पर कायम हूं। यह सच है कि अुस तक पहुंचने यानी अुसका पूरा-पूरा अमल करनेका काम कठिन है। क्या अहिंसाकी भी यही हालत नहीं है? फिर भी १९२० में हमने यह सीधी चढ़ाअी चढ़नेका निश्चय किया था। . . .

अहिंसाके जरिये समाजमें हेरफेर करनेके प्रयोग अभी चल रहे हैं, और अुनकी तफसील तैयार हो रही है। अिन प्रयोगोंमें प्रत्यक्ष दिखाने जैसा तो कोअी खास या वड़ा काम हमने किया नहीं है। मगर यह तय है कि चाल चाहे कितनी ही धीमी क्यों न हो, फिर भी अिस तरीके पर समानताकी दिशामें काम तो शुरू हो चुका है।

और चूंकि अहिंसाका रास्ता हृदय-परिवर्तनका रास्ता है, असलिअे अुसमें जो भी हेरफेर होते हैं वे कायमी होते हैं। . . .

यह (अहिंसक स्वराज्य) किसी अच्छे मुहूर्तमें अचानक आसमानसे नहीं टपक पड़ेगा। बल्कि जब हम सब मिलकर अेकसाथ अपनी मेहनतसे अेक-अेक अींट चुनते चलेंगे, तभी स्वराज्यकी अिमारत खड़ी हो सकेगी। अिस दिशामें हमने काफी लम्बी और अच्छी मंजिल तय की है। लेकिन स्वराज्यकी संपूर्ण शोभा और भव्यताका दर्शन करनेसे पहले हमको अभी अिससे भी ज्यादा लम्बा और थकानेवाला रास्ता तय करना है।

रचनात्मक कार्यक्रम, पृष्ठ ४०-४२, १९५९

"किसी भी अुच्च वर्ग और आम जनताके, राजा और रंकके बीचके बड़े भारी भेदको यह कहकर अुचित नहीं मान लेना चाहिये कि पहलेकी जरूरतें दूसरेसे बड़ी हुअी हैं। यह बेकारकी दलील और मेरे तर्कका मजाक अुड़ाना होगा। आजके अमीर और गरीबके भेदसे दिलको बड़ी चोट पहुंचती है। विदेशी नौकरशाही और देशके रहनेवाले — शहरी लोग — गांवके गरीबोंका शोषण करते हैं। गांववाले अन्न पैदा करते हैं और खुद भूखों मरते हैं। वे दूध पैदा करते हैं और अुनके बच्चोंको दूधकी अेक बूंद भी मयस्सर नहीं होती। यह कितना शर्मनाक है! हर आदमीको पौष्टिक भोजन, रहनेके लिअे अच्छा मकान, बच्चोंकी शिक्षाके लिअे हर तरहके सुभीते और दवा-दारूकी मदद मिलनी चाहिये।" गांधीजीकी आर्थिक समानताकी यही कल्पना है। वे जरूरतसे ज्यादा किसी भी चीजको रखनेका विरोध नहीं करते। मगर अुसका नम्बर तभी आता है जब कि गरीबोंकी जरूरतें पूरी हो जायें। जो काम पहले करने लायक है, वह पहले किया जाना चाहिये।

[श्री प्यारेलालके 'गांधीजीका साम्यवाद' नामक लेखसे]
हरिजनसेवक, ३१-३-'४६

प्र० — आर्थिक समानताके ध्येयको हासिल करनेके लिअे आपके तरीके और साम्यवादी या समाजवादी तरीकेमें क्या फर्क है?

अु० — साम्यवादियों और समाजवादियोंका कहना है कि आज वे आर्थिक समानताको जन्म देनेके लिअे कुछ नहीं कर सकते। वे अुसके लिअे प्रचार भर कर सकते हैं। अिसके लिअे लोगोंमें द्वेष या वैर पैदा करने और अुसे बढ़ानेमें अुनका विश्वास है। अुनका कहना है कि राजसत्ता पाने पर वे लोगोंसे समानताके सिद्धान्त पर अमल करवायेंगे। मेरी योजनाके अनुसार राज्य प्रजाकी अिच्छाको पूरी करेगा, न कि लोगोंको आज्ञा देगा या अपनी आज्ञा जबरन् अुन पर लादेगा। मैं घृणासे नहीं, प्रेमकी शक्तिसे लोगोंको अपनी बात समझाअूंगा और अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता पैदा करूंगा। मैं सारे समाजको अपने मतका बनाने तक रुकूंगा नहीं — बल्कि अपने पर ही यह प्रयोग शुरू कर दूंगा। अिसमें जरा भी शक नहीं कि अगर मैं ५० मोटरोंका तो क्या १० बीघा जमीनका भी मालिक होअूं, तो मैं अपनी कल्पनाकी आर्थिक समानताको जन्म नहीं दे सकता। अुसके लिअे मुझे गरीब बन जाना होगा। यही मैं पिछले ५० सालोंसे या अुससे भी ज्यादा समयसे करता आया हूं। अिसीलिअे मैं पक्का कम्युनिस्ट होनेका दावा करता हूं। अगरचे मैं धनवानों द्वारा दी गअी मोटरों या दूसरे सुभीतोंसे फायदा अुठाता हूं, मगर मैं अुनके वशमें नहीं हूं। अगर आम जनताके हितोंका वैसा तकाजा हुआ, तो बातकी बातमें मैं अुनको अपनेसे दूर हटा सकता हूं।

हरिजनसेवक, ३१–३–'४६

मुझे अिसमें कोअी शंका नहीं कि अगर हिन्दुस्तानको आजादीका दूसरोंके सामने अुदाहरण पेश करनेवाला जीवन बिताना हो, जो दुनियाके लिअे अीर्ष्याकी चीज बन जाय, तो भंगियों, डॉक्टरों, वकीलों, शिक्षकों, व्यापारियों और दूसरे सब लोगोंको दिनभर अीमानदारीसे करनेके लिअे अेकसा वेतन मिलना चाहिये। भारतका समाज ही अिस लक्ष्य — मकसद — तक न पहुंच सके, लेकिन अगर

हिन्दुस्तानको अेक सुखी देश बनना हो तो हर हिन्दुस्तानीका यह फर्ज है कि वह अिसी लक्ष्यकी ओर अपने कदम बढ़ाये।

हरिजनसेवक, १६-३-'४७

आज देशमें भयकर आर्थिक असमानता है। समाजवादकी जडमें आर्थिक समानता है। थोडे लोगोको करोड़ और बाकी सब लोगोको सूखी रोटी भी नही, अैसी भयानक असमानतामें रामराज्यका दर्शन करनेकी आशा कभी नही रखी जा सकती।

हरिजनसेवक, १-६-'४७

७

समान वितरण

भारतकी जरूरत यह नही है कि चद लोगोके हाथमें बहुत सारी पूजी अिकट्ठी हो जाय। पूजीका अैसा बटवारा होना चाहिये कि वह अिस १९०० मील लम्बे और १५०० मील चौडे विशाल देशको बनानेवाले साढे सात लाख गावोंको आसानीसे मिल सके।

यंग अिडिया, २३-३-'२१

आर्थिक समानताका अर्थ है जगतके सब मनुष्योंके पास समान सम्पत्तिका होना, यानी सबके पास अितनी सम्पत्तिका होना कि जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकतायें पूरी कर सके। कुदरतने ही अेक आदमीका हाजमा अगर नाजुक बनाया हो और वह केवल पाव ही तोला अन्न खा सके और दूसरेको बीस तोला अन्न खानेकी आवश्यकता हो, तो दोनोंको अपनी-अपनी पाचन-शक्तिके अनुसार अन्न मिलना चाहिये। सारे समाजकी रचना अिस आदर्शके आधार पर होनी चाहिये। अहिंसक समाजको दूसरा/आदर्श नही रखना चाहिये। पूर्ण आदर्श तक हम शायद कभी नही पहुंच सकते, मगर अुसे नजरमें रखकर हम विधान बनायें और व्यवस्था करें। जिस हद तक हम

अिस आदर्शको पहुंच सकेंगे, अुसी हद तक हम सुख और संतोष प्राप्त करेंगे; और अुसी हद तक सामाजिक अहिंसा सिद्ध हुआी कही जा सकेगी।

अिस आर्थिक समानताके धर्मका पालन कोअी अकेला मनुष्य भी कर सकता है। दूसरोंके साथकी अुसे आवश्यकता नहीं रहती। अगर अेक आदमी अिस धर्मका पालन कर सकता है, तो जाहिर है कि अेक मण्डल भी कर सकता है। यह कहनेकी जरूरत अिसलिअे है कि किसी भी धर्मके पालनमें जब तक दूसरे अुसका पालन न करने लगें तब तक हमें रुके रहनेकी आवश्यकता नहीं। और फिर जब तक आखिरी हद तक न पहुंच सकें तब तक कुछ भी त्याग न करनेकी वृत्ति बहुधा देखनेमें आती है। यह वृत्ति भी हमारी गतिको रोकती है।

अब अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता कैसे लायी जा सकती है अिसका हम विचार करें। पहला कदम यह है कि जिसने अिस आदर्शको अपनाया हो वह अपने जीवनमें आवश्यक परिवर्तन करे। हिन्दुस्तानकी गरीब प्रजाके साथ अपनी तुलना करके वह अपनी आवश्यकतायें कम करे, अपनी धन कमानेकी शक्तिको अंकुशमें रखे, जो धन कमाये अुसे अीमानदारीसे कमानेका निश्चय करे, सट्टेकी वृत्ति हो तो अुसका त्याग करे, घर भी अपनी सामान्य आवश्यकता पूरी करने जैसा ही रखे, और जीवनको हर तरहसे संयमी बनाये। अपने जीवनमें सारे संभव सुधार कर लेनेके बाद वह अपने मिलने-जुलनेवालों और पड़ोसियोंमें समानताके आदर्शका प्रचार करे।

आर्थिक समानताकी जड़में धनिकका ट्रस्टीपन निहित है। अिस आदर्शके अनुसार धनिकको अपने पड़ोसीसे अेक कौड़ी भी ज्यादा रखनेका अधिकार नहीं है। तब अुसके पास जो ज्यादा है वह क्या अुससे छीन लिया जाय? अैसा करनेके लिअे हिंसाका आश्रय लेना पड़ेगा। और हिंसाके द्वारा अैसा करना संभव हो, तो भी समाजको अुससे कुछ फायदा नहीं होगा। क्योंकि धन अिकट्ठा करनेकी शक्ति रखनेवाले अेक आदमीकी शक्तिको समाज खो बैठेगा। अिसलिअे

अहिंसक मार्ग यह है कि जितनी युक्ति मानी जा सके अुतनी अपनी आवश्यकतायें पूरी करनेके बाद जो पैसा बाकी बचे अुसका वह प्रजाकी ओरसे ट्रस्टी बन जाय। अगर वह प्रामाणिकतासे संरक्षक बनेगा, तो जो पैसा पैदा करेगा अुसका सद्व्यय भी करेगा। जब मनुष्य अपने आपको समाजका सेवक मानेगा, समाजके खातिर धन कमायेगा और समाजके कल्याणके लिअे अुसे खर्च करेगा, तब अुसकी कमाईमें शुद्धता आयेगी। अुसके साहसमें भी अहिंसा होगी। अिस प्रकारकी कार्य-प्रणालीका आयोजन किया जाय, तो समाजमें बगैर संघर्षके मूक क्रान्ति पैदा हो सकती है।

यह प्रश्न हो सकता है कि अिस प्रकार मनुष्य-स्वभावमें परिवर्तन होनेका अुल्लेख अितिहासमें कहीं देखा गया है? व्यक्तियोंमें तो अैसा हुआ ही है। लेकिन बड़े पैमाने पर समाजमें परिवर्तन हुआ है, यह शायद सिद्ध न किया जा सके। अिसका अर्थ अितना ही है कि व्यापक अहिंसाका प्रयोग आज तक नहीं किया गया। हम लोगोंके हृदयमें अिस झूठी मान्यताने घर कर लिया है कि अहिंसा व्यक्तिगत रूपसे ही विकसित की जा सकती है, और वह व्यक्ति तक ही मर्यादित है। दरअसल बात अैसी नहीं है। अहिंसा सामाजिक धर्म है। सामाजिक धर्मके तौर पर अुसे विकसित किया जा सकता है, यह मनवानेका मेरा प्रयत्न और प्रयोग चल रहा है। यह नअी चीज है अिसलिअे अिसे झूठ समझकर फेंक देनेकी बात अिस युगमें तो कोअी नहीं कहेगा। यह कठिन है अिसलिअे अशक्य है, यह भी अिस युगमें कोअी नहीं कहेगा। क्योंकि बहुतसी चीजें अपनी आखोंके सामने नअी-पुरानी होती हमने देखी हैं। जो असंभव लगता था अुसे संभव बनते हमने देखा है। मेरी यह मान्यता है कि अहिंसाके क्षेत्रमें अिससे बहुत ज्यादा साहस संभव है, और विविध धर्मोंके अितिहास अिस बातके प्रमाणोंसे भरे पड़े हैं। समाजमें से धर्मको निकाल कर फेंक देनेका प्रयत्न बांझके घर पुत्र पैदा करने जितना ही निष्फल है, और अगर कहीं वह सफल हो जाये तो समाजका अुसमें नाश है। धर्मके रूपान्तर हो सकते हैं। अुसमें

जिस तरह सच्चे नीतिधर्ममें और अच्छे अर्थशास्त्रमें कोअी विरोध नहीं होता, अुसी तरह सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी नीतिधर्मके अूंचेसे अूंचे आदर्शका विरोधी नहीं होता। जो अर्थशास्त्र धनकी पूजा करना सिखाता है और बलवानोंको दुर्बलोंका शोषण करके धनका संग्रह करनेकी सुविधा देता है, अुसे शास्त्रका नाम नहीं दिया जा सकता। वह तो अेक झूठी चीज है जिससे हमें कोअी लाभ नहीं हो सकता। अुसे अपना कर हम मृत्युको न्यौता देंगे। सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्यायकी हिमायत करता है; वह समान भावसे सबकी भलाअीका — जिनमें कमजोर भी शामिल हैं — प्रयत्न करता है और सभ्य तथा सुन्दर जीवनके लिअे अनिवार्य है।

हरिजन, ९–१०–'३७

मैंने अपने कअी देशबन्धुओंको यह कहते सुना है कि हम अमेरिकाका धन तो प्राप्त करेंगे, परन्तु अुसकी पद्धतियोंको नहीं अपनायेंगे। मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि अगर अैसा प्रयत्न किया गया तो वह जरूर असफल रहेगा। हम अेक ही क्षणमें बुद्धिमान, शांत और क्रोधी नहीं हो सकते।

मैं चाहूंगा कि हमारे नेता हमें नैतिक दृष्टिसे दुनियामें सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेकी शिक्षा दें। हमसे कहा जाता है कि हमारी यह भारत-भूमि अेक समय देवोंका निवासस्थान थी। परन्तु अैसी भूमिमें देवोंके निवासकी कल्पना नहीं की जा सकती, जो मिलों और कारखानोंके धुअें और शोरगुलसे नफरतके लायक बना दी गअी है और जिसके मार्गों पर मुसाफिरोंकी भीड़से भरी बेशुमार मोटर-गाड़ियोंको खींचनेवाले अिंजन हमेशा तेजीसे दौड़ते रहते हैं। ये ।।फिर अैसे होते हैं जो अधिकतर यह नहीं जानते कि अुन्हें चनमें क्या करना है, जो हमेशा असावधान रहते हैं और जिनके भावमें अिसलिअे कोअी सुधार नहीं होता कि अुन्हें सन्दूकोंमें भरी ओ। मछलियोंकी तरह मोटर-गाड़ियोंमें बुरी तरह ठूंस दिया जाता है; ये अैसे अजनबी लोगोंके बीच अपनेको पाते हैं, जो बस चले अिन्हें गाड़ीसे बाहर निकाल देंगे और जिन्हें ये भी बदलेमें अिसी

तरह बाहर निकाल देंगे। मैं अिन बातोंका जिक्र अिसलिअे करता हूं कि ये सब चीजें भौतिक प्रगतिकी निशानियां मानी जाती हैं। लेकिन वास्तवमें ये हमारे सुखको रत्तीभर भी नहीं बढ़ातीं।

• स्पीचेज अेण्ड रायटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ३५३-५४

सच पूछा जाय तो कोअी प्रवृत्ति और कोअी भी अुद्योग, चाहे कितना ही छोटा हो, थोड़ी-बहुत हिंसाके बिना संभव नहीं। कुछ न कुछ हिंसाके बिना जिन्दा रहना भी असंभव है। हमें करना यही है कि हम अुसे यथासंभव ज्यादासे ज्यादा घटायें। वास्तवमें अहिंसा शब्दका, जो नकारात्मक है, अर्थ ही यह है कि जीवनमें जो हिंसा अनिवार्य है अुसे छोड़ देनेका वह प्रयत्न है। अिसलिअे जो कोअी अहिंसामें विश्वास रखता है, वह अैसे धंधोंमें लगेगा जिनमें कमसे कम हिंसा हो। अिस प्रकार, अुदाहरणके लिअे, यह कल्पना नहीं की जा सकती कि अहिंसामें विश्वास रखनेवाला कोअी आदमी कसाअीका धंधा करेगा। यह बात नहीं है कि मांसाहारी अहिंसक नहीं हो सकता। परंतु अहिंसामें विश्वास रखनेवाला मांसाहारी भी शिकार नहीं करेगा और न वह युद्ध या युद्धकी तैयारियां करेगा। अिस प्रकार अनेक प्रवृत्तियां और धंधे अैसे हैं, जिनमें हिंसा अवश्य होती है और जिनसे अहिंसक मनुष्यको बचना चाहिये। परन्तु खेती असी प्रवृत्ति है, जिसके बिना जीवन असंभव है; और अुसमें कुछ न कुछ हिंसा तो होती ही है। अिसलिअे निर्णायक तत्त्व यह है क्या धंधेकी बुनियाद हिंसा पर है? परन्तु चूंकि प्रवृत्तिमात्रमें कुछ न कुछ हिंसा होती ही है, अिसलिअे हमारा काम अितना ही है कि अुसमें होनेवाली हिंसाको हम कमसे कम करनेका प्रयत्न करें। अहिंसामें हार्दिक विश्वास हुअे बिना यह संभव नहीं। मान लीजिये अेक अैसा मनुष्य है जो प्रत्यक्ष हिंसा नहीं करता, और अपनी रोजीके लिअे श्रम करता है, परन्तु दूसरोंके धन या वैभव पर सदा अीर्ष्यासे जलता रहता है। वह अहिंसक नहीं है। अिस प्रकार अहिंसक धंधा वह धंधा है, जो बुनियादी तौर पर हिंसासे मुक्त हो और जिसमें दूसरोंका शोषण या अीर्ष्या नहीं हो।

रहे प्रत्यक्ष वहम, राझन और अपूर्णतायें दूर हो सकती हैं, हुअी हैं और होती रहेंगी। मगर धर्म तो जब तक जगत है तब तक चलता ही रहेगा, क्योंकि जगतका धर्म ही अेक आधार है। धर्मकी अन्तिम व्याख्या है अीश्वरका कानून। अीश्वर और अुसका कानून अलग-अलग चीजें नहीं हैं। अीश्वर अर्थात् अचलित, जीता-जागता कानून। अुसका पार कोअी नहीं पा सका है। मगर अवतारोंने और पैगम्बरोंने तपस्या करके अुसके कानूनकी कुछ कुछ झांकी जगतको कराअी है।

किन्तु भारी प्रयत्न करने पर भी धनिक संरक्षक न बनें और भूखों मरते हुअे करोड़ोंको अहिंसाके नामसे और अधिक कुचलते जायें तब क्या किया जाय? अिस प्रश्नका अुत्तर ढूंढ़नेमें ही अहिंसक असहयोग और सविनय कानून-भंग प्राप्त हुअे। कोअी धनवान गरीबोंके सहयोगके बिना धन नहीं कमा सकता। मनुष्यको अपनी हिंसक शक्तिका भान है, क्योंकि वह तो अुसे लाखों वर्षोंसे विरासतमें मिली हुअी है। जब अुसे चार पैरकी जगह दो पैर और दो हाथवाले प्राणीका आकार मिला, तब अुसमें अहिंसक शक्ति भी आअी। हिंसा-शक्तिका तो अुसे मूलसे ही भान था, मगर अुसका अहिंसा-शक्तिका भान भी धीरे-धीरे अचूक रीतिसे रोज रोज बढ़ने लगा। यह भान गरीबोंमें फैल जाये तो वे बलवान बनें और आर्थिक असमानताको, जिसके वे शिकार बने हुअे हैं, अहिंसक तरीकेसे दूर करना सीख लें।

हरिजनसेवक, २४–८–'४०

८

अहिंसक अर्थ-व्यवस्था

मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मैं अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्रमें न सिर्फ स्पष्ट भेद नहीं करता, बल्कि कोअी भी भेद नहीं करता। जिस अर्थशास्त्रसे व्यक्ति या राष्ट्रके नैतिक कल्याणको नुकसान पहुंचता हो अुसे मैं अनीतिपूर्ण और अिसलिअे पापपूर्ण कहूंगा। अुदाहरणके लिअे, जो अर्थशास्त्र किसी देशको किसी दूसरे देशका शोषण करनेकी अनुमति देता है वह अनीतिपूर्ण है। जो मजदूरोंको अुचित मेहनताना नहीं देते और अुनके परिश्रमका शोषण करते हैं, अुनसे वस्तुअें खरीदना या अुन वस्तुओंका अुपयोग करना पापपूर्ण है।

यंग अिंडिया, १३–१०–'२१

मेरी रायमें भारतकी — न सिर्फ भारतकी बल्कि सारी दुनियाकी — अर्थ-रचना अैसी होनी चाहिये कि किसीको भी अन्न और वस्त्रकी तंगी न सहनी पड़े। दूसरे शब्दोंमें, *हरअेकको अितना काम अवश्य* मिल जाना चाहिये कि वह अपने खाने-पहननेकी जरूरतें पूरी कर सके। और यह आदर्श हर जगह तभी व्यवहारमें अुतारा जा सकता है जब जीवनकी प्राथमिक आवश्यकताओंके अुत्पादनके साधन जनताके नियंत्रणमें रहें। वे हरअेकको बिना किसी बाधाके अुसी तरह प्राप्त होने चाहिये, जिस तरह कि भगवानकी दी हुअी हवा और पानी हमें प्राप्त हैं या होने चाहिये, किसी भी हालतमें वे दूसरोंके शोषणके लिअे चलाये जानेवाले व्यापारका वाहन न बनें। किसी भी देश, राष्ट्र या समुदायका अुन पर अेकाधिकार होना अन्यायपूर्ण माना जायगा। हम आज न केवल अपने अिस दुःखी देशमें बल्कि दुनियाके दूसरे हिस्सोंमें भी जो गरीबी देखते हैं, अुसका कारण अिस सरल सिद्धान्तकी अुपेक्षा ही है।

यंग अिंडिया, १५–११–'२८

जिस तरह सच्चे नीतिधर्ममें और अच्छे अर्थशास्त्रमें कोअी विरोध नहीं होता, अुसी तरह सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी नीतिधर्मके अूंचे-से-अूंचे आदर्शका विरोधी नहीं होता। जो अर्थशास्त्र धनकी पूजा करना सिखाता है और बलवानोंको निर्बलोंका शोषण करके धनका संग्रह करनेकी सुविधा देता है, असे शास्त्रका नाम नहीं दिया जा सकता। वह तो अेक झूठी चीज है जिससे हमें कोअी लाभ नहीं हो सकता। अुसे अपना कर हम मृत्युको न्योता देंगे। सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्यायकी हिमायत करता है; वह समान भावसे सबकी भलाअीका — जिनमें कमजोर भी शामिल हैं — प्रयत्न करता है और सभ्य तथा सुन्दर जीवनके लिअे अनिवार्य है।

हरिजन, ९-१०-'३७

मैंने अपने कअी देशबन्धुओंको यह कहते सुना है कि हम अमेरिकाका धन तो प्राप्त करेंगे, परन्तु अुसकी पद्धतियोंको नहीं अपनायेंगे। मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि अगर असा प्रयत्न किया गया तो वह जरूर असफल रहेगा। हम अेक ही क्षणमें बुद्धिमान, शांत और क्रोधी नहीं हो सकते।

मैं चाहूंगा कि हमारे नेता हमें नैतिक दृष्टिसे दुनियामें सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेकी शिक्षा दें। हमसे कहा जाता है कि हमारी यह भारत-भूमि अेक समय देवोंका निवासस्थान थी। परन्तु असी भूमिमें देवोंके निवासकी कल्पना नहीं की जा सकती, जो मिलों और कारखानोंके धुअें और शोरगुलसे नफरतके लायक बना दी गअी है और जिसके मार्गों पर मुसाफिरोंकी भीड़से भरी बेशुमार मोटर-गाड़ियोंको खींचनेवाले अिंजन हमेशा तेजीसे दौड़ते रहते हैं। ये मुसाफिर असे होते हैं जो अधिकतर यह नहीं जानते कि अुन्हें जीवनमें क्या करना है, जो हमेशा असावधान रहते हैं और जिनके स्वभावमें अिसलिअे कोअी सुधार नहीं होता कि अुन्हें सन्दूकोंमें भरी हुअी मछलियोंकी तरह मोटर-गाड़ियोंमें बुरी तरह ठूंस दिया जाता है; और ये असे अजनबी लोगोंके बीच अपनेको पाते हैं, जो बस चले तो अिन्हें गाड़ीसे बाहर निकाल देंगे और जिन्हें ये भी बदलेमें अिसी

तरह बाहर निकाल देंगे। मैं अिन बातोंका जिक्र अिसलिअे करता हूं कि ये सब चीजें भौतिक प्रगतिकी निशानियां मानी जाती हैं। लेकिन वास्तवमें ये हमारे सुखको रत्तीभर भी नहीं बढ़ातीं।

• स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ३५३-५४

सच पूछा जाय तो कोअी प्रवृत्ति और कोअी भी अुद्योग, चाहे कितना ही छोटा हो, थोड़ी-बहुत हिंसाके बिना संभव नहीं। कुछ न कुछ हिंसाके बिना जिन्दा रहना भी असंभव है। हमें करना यही है कि हम अुसे यथासंभव ज्यादासे ज्यादा घटायें। वास्तवमें अहिंसा शब्दका, जो नकारात्मक है, अर्थ ही यह है कि जीवनमें जो हिंसा अनिवार्य है अुसे छोड़ देनेका वह प्रयत्न है। अिसलिअे जो कोअी अहिंसामें विश्वास रखता है, वह अैसे धंधोंमें लगेगा जिनमें कमसे कम हिंसा हो। अिस प्रकार, अुदाहरणके लिअे, यह कल्पना नहीं की जा सकती कि अहिंसामें विश्वास रखनेवाला कोअी आदमी कसाअीका धंधा करेगा। यह बात नहीं है कि मांसाहारी अहिंसक नहीं हो सकता। परन्तु अहिंसामें विश्वास रखनेवाला मांसाहारी भी शिकार नहीं करेगा और न वह युद्ध या युद्धकी तैयारियां करेगा। अिस प्रकार अनेक प्रवृत्तियां और धंधे अैसे हैं, जिनमें हिंसा अवश्य होती है और जिनसे अहिंसक मनुष्यको बचना चाहिये। परन्तु खेती असी प्रवृत्ति है, जिसके बिना जीवन असंभव है, और अुसमें कुछ न कुछ हिंसा तो होती ही है। अिसलिअे निर्णायक तत्त्व यह है: क्या धंधेकी बुनियाद हिंसा पर है? परन्तु चूंकि प्रवृत्तिमात्रमें कुछ न कुछ हिंसा होती ही है, अिसलिअे हमारा काम अितना ही है कि अुसमें होनेवाली हिंसाको हम कमसे कम करनेका प्रयत्न करें। अहिंसामें हार्दिक विश्वास हुअे बिना यह संभव नहीं। मान लीजिये अेक अैसा मनुष्य है जो प्रत्यक्ष हिंसा नहीं करता, और अपनी रोजीके लिअे श्रम करता है, परन्तु दूसरोंके धन या वैभव पर सदा अीर्ष्यासे जलता रहता है। वह अहिंसक नहीं है। अिस प्रकार अहिंसक धंधा वह धंधा है, जो बुनियादी तौर पर हिंसासे मुक्त हो और जिसमें दूसरोंका शोषण या अीर्ष्या नहीं हो।

मेरे पास अिसका ऐतिहासिक सबूत तो नहीं है, परन्तु मेरा विश्वास है कि भारतवर्षमें अेक समय अैसा था, जब ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थाका संगठन अिस तरहके अहिंसक धंधोंके आधार पर, मनुष्यके अधिकारोंके आधार पर नहीं परन्तु मनुष्यके कर्तव्योंके आधार पर, होता था। जो अिन धंधोंमें लगते थे वे अपनी रोजी बेशक कमाते थे, परन्तु अुनके श्रमसे समाजकी भलाई होती थी। अुदाहरणार्थ, अेक बढ़ई गांवके किसानकी जरूरतें पूरी करता था। अुसे कोई नकद मजदूरी नहीं मिलती थी, परन्तु गांववाले अुसे अपनी पैदावारमें हिस्सा देते थे। अिस व्यवस्थामें भी अन्याय हो सकता है, परन्तु वह अत्यन्त कम किया जा सकता है। मैं साठ सालसे भी पहलेके काठियावाड़ी जीवनकी निजी जानकारीसे यह कह रहा हूं। अुस समय लोगोंकी आंखोंमें आजकी अपेक्षा अधिक तेज था, अुनके हाथ-पैर आजसे ज्यादा मजबूत थे। अुस जीवनका आधार अहिंसा थी, हालांकि अिसका लोगोंको भान नहीं था।

शरीर-श्रम अिन धंधों और अुद्योगोंकी जान था और बड़े पैमाने पर कोअी कल-कारखाने नहीं थे। कारण, जब मनुष्य अुतनी ही जमीन रखकर संतोष मान लेता है जिसे वह खुद मेहनत करके जोत सके, तब वह दूसरोंका शोषण नहीं कर सकता। दस्तकारियोंमें शोषण और गुलामीकी गुंजाअिश नहीं होती। बड़े पैमाने पर चलनेवाले कारखाने अेक आदमीके हाथोंमें धन अिकट्ठा कर देते हैं और वह बाकी लोगों पर, जो अुसके लिअे गुलामों जैसे काम करते हैं, प्रभुत्व जमा लेता है। संभव है वह अपने मजदूरोंके लिअे आदर्श स्थिति अुत्पन्न करनेका प्रयत्न कर रहा हो, परन्तु फिर भी वह शोषण ही है; और शोषण हिंसाका अेक रूप है।

जब मैं कहता हूं कि अेक समय अैसा था जब समाजका आधार शोषण पर नहीं बल्कि न्याय पर था, तब मैं यह सुझाना चाहता हूं कि सत्य और अहिंसा अुस समय अैसे सद्‌गुण नहीं थे जिनका आचरण व्यक्तियों तक ही सीमित था, बल्कि सारे समाज भी अुनका आचरण करते थे। मेरी दृष्टिमें अैसा सद्‌गुण कोअी मूल्य नहीं रखता,

जो व्यक्तियों तक ही सीमित रहे या व्यक्ति ही जिसका आचरण कर सके।

हरिजन, १-९-'४०

९

जोते अुसकी जमीन

यदि भारतीय समाजको शान्तिपूर्ण मार्ग पर सच्ची प्रगति करनी है, तो धनिक वर्गको निश्चित रूपसे स्वीकार कर लेना होगा कि किसानके भीतर भी वैसी ही आत्मा है जैसी अुनके भीतर है और अपनी दौलतके कारण वे गरीबोंसे श्रेष्ठ नहीं हैं। जैसा जापानके अुमरावोंने किया अुसी तरह अुन्हें भी अपने-आपको सरक्षक मानना चाहिये। अुनके पास जो धन है अुसे यह समझकर रखना चाहिये कि अुसका अुपयोग अुन्हें अपने सरक्षित किसानोंकी भलाओके लिअे करना है। अुस हालतमें वे अपने परिश्रमके कमीशनके रूपमें वाजिब रकमसे ज्यादा नहीं लेंगे। अिस समय धनिक वर्गके सर्वथा अनावश्यक दिखावे और फिजूलखर्चीमें तथा जिन किसानोंके बीचमें वे रहते हैं अुनके गंदगीभरे वातावरण और कुचल डालनेवाले दारिद्र्यमें कोओ अनुपात नहीं है। अिसलिअे अेक आदर्श जमींदार किसानोंका बहुत कुछ बोझा, जो वे अभी अुठा रहे हैं, अेकदम घटा देगा। वह किसानोंके गहरे सपर्कमें आयेगा और अुनकी आवश्यकताओंको जानकर अुस निराशाके स्थान पर, जो अुनके प्राणोंको सुखाये डाल रही है, अुनमें आशाका सचार करेगा। वह किसानोंमें फैले सफाओ और तन्दु-रुस्तीके नियमोंके अज्ञानको दर्शककी तरह देखता नहीं रहेगा, बल्कि अिस अज्ञानको दूर करेगा। किसानोंके जीवनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके लिअे वह स्वय अपनेको दरिद्र बना लेगा। वह अपने किसानोंकी आर्थिक स्थितिका अध्ययन करेगा और अैसे स्कूल खोलेगा, जिनमें किसानोंके बच्चोंके साथ-साथ अपने खुदके बच्चोंको भी

पढ़ायेगा। वह गांवके कुओं और तालावको साफ करायेगा। वह किसानोंको अपनी सड़कें और अपने पाखाने खुद आवश्यक परिश्रम करके साफ करना सिखायेगा। वह किसानोंके लिअे अपने बाग-बगीचे निःसंकोच भावसे खोल देगा, ताकि वे स्वतंत्रतासे अुनका अुपयोग कर सकें। जो गैर-जरूरी अिमारतें वह अपनी मौजके लिअे रखता है, अुनका अुपयोग अस्पताल, स्कूल या अैसी ही अन्य बातोंके लिअे करेगा।

यदि पूंजीपति वर्ग कालका संकेत समझकर सम्पत्तिके बारेमें अपने अिस विचारको बदल डालें कि अुस पर अुनका अीश्वर-प्रदत्त अधिकार है, तो जो सात लाख घूरे आज गांव कहलाते हैं अुन्हें आनन-फाननमें शान्ति, स्वास्थ्य और सुखके धाम बनाया जा सकता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि पूंजीपति जापानके अुमरावोंका अनुसरण करें, तो वे सचमुच कुछ खोयेंगे नहीं और सब कुछ पायेंगे। केवल दो मार्ग हैं जिनमें से अुन्हें अपना चुनाव कर लेना है। अेक तो यह कि पूंजीपति अपना अतिरिक्त संग्रह स्वेच्छासे छोड़ दें और अुसके परिणामस्वरूप सबको वास्तविक सुख प्राप्त हो जाय। दूसरा यह कि अगर पूंजीपति समय रहते न चेतें तो करोड़ों जाग्रत किन्तु अज्ञान और भूखे लोग देशमें अैसी गड़बड़ मचा दें, जिसे अेक बलशाली हुकूमतकी फौजी ताकत भी नहीं रोक सकती। मैंने यह आशा रखी है कि भारतवर्ष अिस विपत्तिसे बचनेमें सफल रहेगा। अुत्तर प्रदेशके कुछ नौजवान तालुकेदारोंसे मेरा जो घनिष्ठ सम्पर्क हुआ है अुससे मेरी यह आशा बलवती बनी है।

यंग अिंडिया, ५-१२-'२९

मैं जमींदारों और दूसरे पूंजीपतियोंका अहिंसाके द्वारा हृदय-परिवर्तन करना चाहता हूं और अिसलिअे वर्गयुद्धकी अनिवार्यताको मैं स्वीकार नहीं करता। कमसे कम संघर्षका रास्ता लेना मेरे अहिंसाके प्रयोगका अेक जरूरी हिस्सा है। जमीन पर मेहनत करनेवाले किसान और मजदूर ज्यों ही अपनी ताकत पहचान लेंगे, त्यों जमींदारीकी बुराअीका बुरापन दूर हो जायगा। अगर वे लोग

यह कह दें कि अुन्हें सभ्य जीवनकी आवश्यकताके अनुसार बढ़िया भोजन, वस्त्र और शिक्षा आदिके लिअे जब तक काफी मजदूरी नहीं दी जायगी, तब तक वे जमीनको जोतेंगे-बोयेंगे ही नहीं तो जमींदार बेचारा कर ही क्या सकता है? सच तो यह है कि मेहनत करनेवाला जो कुछ पैदा करता है अुसका वही मालिक है। अगर मेहनत करनेवाले बुद्धिपूर्वक अेक हो जाय तो वे अेक अैसी ताकत बन जायंगे जिसका मुकाबला कोअी नहीं कर सकता। और अिसी-लिअे मैं वर्गयुद्धकी कोअी जरूरत नहीं देखता। यदि मैं अुसे अनिवार्य मानता होता तो अुसका प्रचार करनेमें और लोगोंको अुसकी तालीम देनेमें मुझे कोअी संकोच नहीं होता।

हरिजन, ५-१२-'३६

किसानोंका — वे भूमिहीन मजदूर हों या मेहनत करनेवाले जमीन-मालिक हों — स्थान पहला है। अुनके परिश्रमसे ही पृथ्वी अुपजाअू और समृद्ध हुअी है और अिसलिअे सच कहा जाय तो जमीन अुनकी ही है या होनी चाहिये, जमीनसे दूर रहनेवाले जमींदारोंकी नहीं। लेकिन अहिंसक पद्धतिमें मजदूर या किसान अिन जमींदारोंसे अुनकी जमीन बलपूर्वक नहीं छीन सकता। अुसे अिस तरह काम करना चाहिये कि अुसका शोषण करना जमींदारके लिअे असम्भव हो जाय। किसानोंमें आपसमें घनिष्ठ सहकार होना नितान्त आवश्यक है। अिस हेतुकी पूर्तिके लिअे जहां वैसी समितियां न हों वहां वे बनायी जानी चाहिये और जहां हों वहां आवश्यक होने पर अुनका पुनर्गठन होना चाहिये। किसान ज्यादातर अपढ़ हैं। स्कूल जानेकी अुमरवालोंको और बालिगोंको शिक्षा दी जानी चाहिये। शिक्षा पुरुषों और स्त्रियों, दोनोंको ही दी जानी चाहिये। भूमिहीन खेतिहर मज-दूरोंकी मजदूरी अिस हद तक बढ़ाअी जानी चाहिये कि वे निश्चित रूपसे सभ्य जीवन बिता सकें। यानी अुन्हें संतुलित भोजन और आरोग्यकी दृष्टिसे जैसे चाहिये वैसे घर और कपड़े मिल सकें।

दि बॉम्बे क्रॉनिकल, २८-१०-'४४

१०

संरक्षकताका सिद्धान्त

फर्ज कीजिये कि विरासतके या अुद्योग-व्यवसायके द्वारा मुझे काफी बड़ी सम्पत्ति मिल गअी। तब मुझे यह जानना चाहिये कि वह सब सम्पत्ति मेरी नहीं है, बल्कि मेरा तो अुस पर अितना ही अधिकार है कि जिस तरह दूसरे लाखों आदमी गुजर करते हैं अुसी तरह मैं भी अिज्जतके साथ अपना गुजर करूं। मेरी शेष सम्पत्ति पर राष्ट्रका हक है और अुसीके हितके लिअे अुसका अुपयोग होना आवश्यक है। अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन मैंने तब किया था, जब कि जमींदारों और राजाओंकी सम्पत्तिके सम्बन्धमें समाजवादी सिद्धान्त देशके सामने आया था। समाजवादी विशेष सुविधायें पाये हुअे अिन वर्गोंको खतम कर देना चाहते हैं, जब कि मैं यह चाहता हूं कि वे (जमींदार और राजा) अपने लोभ और परिग्रहकी भावनाको छोड़ें और अुन लोगोंके समकक्ष बन जायं जो मेहनत करके रोटी कमाते हैं। मजदूरोंको भी यह महसूस करना होगा कि मजदूरका काम करनेकी शक्ति पर जितना अधिकार है, मालदार आदमीका अपनी सम्पत्ति पर अुससे भी कम अधिकार है।

यह दूसरी बात है कि अिस तरहके सच्चे ट्रस्टी कितने हो सकते हैं। अगर सिद्धान्त ठीक हो तो यह बात गौण है कि अुसका पालन अनेक लोग कर सकते हैं या केवल अेक ही आदमी कर सकता है। यह प्रश्न आत्म-विश्वासका है। अगर आप अहिंसाके सिद्धान्तको स्वीकार करें, तो आपको अुसके अनुसार आचरण करनेकी कोशिश करनी चाहिये, चाहे अुसमें आपको सफलता मिले या असफलता। आप यह तो कह सकते हैं कि अिस पर अमल करना मुश्किल है, लेकिन अिस सिद्धान्तमें अैसी कोअी बात नहीं है जिसके लिअे यह कहा जा सके कि वह बुद्धिग्राह्य नहीं है।

हरिजनसेवक, ३–६–'३९

आप कह सकते हैं कि ट्रस्टीशिप तो कानून-शास्त्रकी अेक कल्पनामात्र है; व्यवहारमें अुसका कहीं कोअी अस्तित्व दिखाअी नहीं पड़ता। लेकिन यदि लोग अुस पर सतत विचार करें और अुसे आचरणमें अुतारनेकी कोशिश भी करते रहें, तो मनुष्य-जातिके जीवनकी नियामक शक्तिके रूपमें प्रेम आज जितना काम करता है अुससे कहीं अधिक काम करेगा। बेशक, पूर्ण ट्रस्टीशिप तो युक्लिडकी बिन्दुकी व्याख्याकी तरह अेक कल्पना ही है और अुतनी ही अप्राप्य भी है। लेकिन यदि अुसके लिअे कोशिश की जाय तो दुनियामें समानताकी स्थापनाकी दिशामें हम दूसरे किसी अुपायसे जितनी दूर तक जा सकते हैं, अुसके बजाय अिस सिद्धान्तसे ज्यादा दूर तक जा सकेंगे। . . . मेरा दृढ़ निश्चय है कि यदि राज्यने पूंजीवादको हिंसाके द्वारा दबानेकी कोशिश की तो वह खुद ही हिंसाके जालमें फंस जायगा और फिर कभी भी अहिंसाका विकास नहीं कर सकेगा। राज्य हिंसाका अेक केन्द्रित और संगठित रूप ही है। व्यक्तिमें आत्मा होती है, परन्तु चूंकि राज्य अेक जड़ यंत्रमात्र है अिसलिअे अुसे हिंसासे कभी नहीं छुड़ाया जा सकता, क्योंकि हिंसासे ही अुसका जन्म होता है। अिसीलिअे मैं ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तको तरजीह देता हूं। यह डर हमेशा बना रहता है कि कहीं राज्य अुन लोगोंके खिलाफ, जो अुससे मतभेद रखते हैं, बहुत ज्यादा हिंसाका अुपयोग न करे। लोग यदि स्वेच्छासे ट्रस्टियोंकी तरह व्यवहार करने लगें तो मुझे सचमुच बड़ी खुशी होगी, लेकिन यदि वे अैसा न करें तो मेरा खयाल है कि हमें राज्यके द्वारा भरसक कम हिंसाका आश्रय लेकर अुनसे अुनकी सम्पत्ति ले लेनी पड़ेगी। . . (यही कारण है कि मैंने गोलमेज परिषदमें यह कहा था कि सभी निहित हित-वालोंकी जांच होनी चाहिये और जहां आवश्यक मालूम हो वहां . . . मुआवजा देकर या मुआवजा बिना दिये ही, जहां अैसा अुचित हो, अुनकी संपत्ति राज्यको अपने हाथोंमें ले लेनी चाहिये।) व्यक्ति-गत तौर पर तो मैं यह चाहूंगा कि राज्यके हाथोंमें शक्तिका ज्यादा केन्द्रीकरण होनेके बजाय ट्रस्टीशिपकी भावनाका विस्तार हो, क्योंकि

मेरी रायमें राज्यकी हिंसाकी तुलनामें वैयक्तिक मालिकीकी हिंसा कम हानिकर है। लेकिन यदि राज्यकी मालिकी अनिवार्य ही हो तो मैं भरसक राज्यकी कमसे कम मालिकीकी सिफारिश करूंगा।

दि मॉडर्न रिव्यू, १९३५, पृ० ४१२

आजकल यह कहना अेक फैशन हो गया है कि समाजको अहिंसाके आधार पर न तो संगठित किया जा सकता है और न चलाया जा सकता है। मैं अिस कथनका विरोध करता हूं। परिवारमें जब पिता अपने पुत्रको अपराध करने पर थप्पड़ मार देता है, तो पुत्र अुसका बदला लेनेकी बात नहीं सोचता। वह अपने पिताकी आज्ञा अिसलिअे स्वीकार कर लेता है कि अिस थप्पड़के पीछे वह अपने पिताके प्यारको आहत हुआ देखता है, अिसलिअे नहीं कि थप्पड़के कारण वह वैसा अपराध दुबारा करनेसे डरता है। मेरी रायमें समाजकी व्यवस्था अिसी तरह होनी चाहिये; यह अुसका अेक छोटा रूप है। जो बात परिवारके लिअे सही है वही समाजके लिअे भी सही है, क्योंकि समाज अेक बड़ा परिवार ही है।

हरिजन, ३-१२-'३८

मेरी धारणा है कि अहिंसा केवल वैयक्तिक गुण नहीं है। वह अेक सामाजिक गुण भी है और अन्य गुणोंकी तरह अुसका भी विकास किया जाना चाहिये। यह तो मानना ही होगा कि समाजके पारस्परिक व्यवहारोंका नियमन बहुत हद तक अहिंसाके द्वारा होता है। मैं अितना चाहता हूं कि अिस सिद्धान्तका बड़े पैमाने पर, राष्ट्रीय और आन्तर-राष्ट्रीय पैमाने पर, विस्तार किया जाय।

हरिजन, ७-१-'३९

मेरा ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त कोअी अैसी चीज नहीं है जो काम निकालनेके लिअे आज घड़ लिया गया हो। अपनी मंशाको छिपानेके लिअे खड़ा किया गया आवरण तो वह हरगिज नहीं है। मेरा विश्वास है कि दूसरे सिद्धान्त जब नहीं रहेंगे तब भी वह रहेगा। अुसके

जमीन-मालिक अपने किसानोंका शोषण करता है और अुनके परिश्रमका फल अपने ही काममें लेकर अुन्हें अुससे वंचित रखता है। जब वे अुसे अुलाहना देते हैं तो वह अुनकी सुनता नहीं और जवाब देता है कि मुझे अितना अपनी पत्नीके लिअे चाहिये, अितना अपने बच्चोंके लिअे चाहिये, अित्यादि अित्यादि। अैसी हालतमें किसान या अुनकी हिमायत करनेवाले और असर रखनेवाले लोग अुसकी पत्नीसे अपील करेंगे कि वह अपने पतिको समझाये। शायद वह अैसा कहेगी कि मुझे अपने लिअे तो यह शोषणका रुपया नहीं चाहिये। बच्चे भी अिसी तरह कहेंगे कि हमें जितना चाहिये अुतना हम खुद कमा लेंगे। अब मान लीजिये कि वह किसीकी नहीं सुनता या अुसके पत्नी-बच्चे किसानोंके विरुद्ध अेक हो जाते हैं, तो भी किसान सिर नहीं झुकायेंगे। अुन्हें कहा जायगा तो वे जमीन छोड़ कर चले जायंगे, मगर यह स्पष्ट कर देंगे कि जमीन अुसीकी है जो अुसे जोतता है। मालिक खुद तो सारी जमीनको जोत नहीं सकता और अुसे अुनकी न्यायपूर्ण मांगोंके आगे झुकना पड़ेगा। परन्तु यह संभव है कि अिन किसानोंकी जगह पर दूसरे किसान आ जायं। तब हिंसा किये विना आन्दोलन तब तक जारी रहेगा, जब तक अिनका स्थान लेनेवाले काश्तकारोंको अपनी भूल महसूस न हो जाय और वे बेदखल किये गये काश्तकारोंके साथ जमींदारके खिलाफ मिल न जायं।

सत्याग्रह लोकमतको शिक्षा देनेकी अेक अैसी प्रक्रिया है, जो समाजके समस्त तत्त्वोंको प्रभावित करके अन्तमें अजेय बन जाती है। हिंसासे अुस प्रक्रियामें बाधा पड़ती है और सारे समाजकी सच्ची क्रान्तिमें विलम्ब होता है।

सत्याग्रहकी सफलताके लिअे जरूरी शर्तें ये हैं: (१) विरोधीके प्रति सत्याग्रहीके हृदयमें घृणा नहीं होनी चाहिये; (२) मुद्दा सच्चा और ठोस होना चाहिये; (३) सत्याग्रहीको अपने कार्यके लिअे अन्त तक कष्ट-सहन करनेकी तैयारी रखनी चाहिये।

हरिजन, ३१–३–’४६

संभव है चन्द सालोंमें पश्चिमी राष्ट्रोंको अफ्रीकामें अपना माल सस्ते दामों बेचनेके लिअे बाजार मिलना बन्द हो जाय। यदि अुद्योगवादका भविष्य पश्चिमके लिअे अन्धकारमय है, तो क्या वह भारतके लिअे और भी ज्यादा अन्धकारमय नहीं होगा?

यंग अिंडिया, १२–११–'३१

मैं नहीं मानता कि किसी भी देशके लिअे किसी भी हालतमें बड़े कल-कारखानोंका विकास करना जरूरी है। भारतके लिअे तो वह और भी कम जरूरी है। मेरा विश्वास है कि स्वाधीन भारत दुःखसे कराहते हुअे संसारके प्रति अपना कर्तव्य अपने सहस्रों गृह-अुद्योगोंका विकास करके, सादा किन्तु अुदात्त जीवन अपनाकर और संसारके साथ शान्तिपूर्वक रहकर ही पूरा कर सकता है। धनपूजा द्वारा हम पर लादी हुअी तेज गतिके आधार पर खड़े पेचीदा भौतिक जीवनका अुच्च विचारोंके साथ कोअी मेल नहीं बैठता। हम जीवनकी सारी मिठास तभी प्रकट कर सकेंगे, जब हम अुदात्त जीवन जीनेकी कला सीख लेंगे।

सिरसे पैर तक शस्त्र-सज्जित संसारके सामने और दिखावे तथा ठाट-बाटके बीच किसी अकेले राष्ट्रके लिअे, भले वह भू-विस्तार और जनसंख्याकी दृष्टिसे कितना ही बड़ा क्यों न हो, अैसा सादा जीवन संभव है या नहीं, यह प्रश्न शंकाशीलोंके मनमें अुठ सकता है। अिसका अुत्तर सीधा-साधा है। यदि सादा जीवन जीने लायक है तो भले ही प्रयत्न कोअी अेक व्यक्ति करे या समूह करे, वह प्रयत्न करने जैसा है।

साथ ही मैं मानता हूं कि कुछ मुख्य अुद्योग आवश्यक हैं। मैं आरामसे बैठकर बातें करनेवालोंके समाजवाद या सशस्त्र समाजवादको नहीं मानता। मैं सबके हृदय-परिवर्तनकी प्रतीक्षा किये बिना अपनी श्रद्धाके अनुसार काम करनेमें विश्वास रखता हूं। अिसलिअे मुख्य अुद्योगोंको गिनाये बिना ही जिन अुद्योगोंमें बहुतसे आदमियोंको अेक साथ काम करना पड़ता है अुन पर राज्यका अधिकार स्थापित कर दूंगा। अुनका परिश्रम कुशलताका हो या मामूली, अुनकी पैदावार

लगा होगा कि समाजवादका आस्तिकतासे कोओी सीधा सम्बन्ध है। शायद अीश्वर-भक्तोंको समाजवादकी जरूरत ही न रही हो। अीश्वर-भक्तोंके मौजूद रहते हुअे भी दुनियामें वहम कहां नहीं देखनेमें आते? हिन्दू धर्ममें अीश्वर-भक्तोंके होते हुअे भी छुआछूत जैसे महान कलंकने क्या समाज पर राज्य नहीं किया?

अीश्वर-तत्त्व क्या है, अुसमें कितनी शक्ति छिपी हुअी है, यह हमेशा खोजका विषय रहा है।

मेरा यह दावा रहा है कि अिसी खोजमें से सत्याग्रहकी खोज हुअी है। यह नहीं कहा जा सकता कि सत्याग्रहसे सम्बन्ध रखनेवाले सारे कायदे बन गये हैं। मैं यह भी नहीं कहता कि अिसके सारे कायदे मैं जानता हूं। मगर अितना मैं दृढ़तासे कह सकता हूं कि सत्याग्रहसे जो कुछ भी पाने जैसा है वह सब पाया जा सकता है। सत्याग्रह बड़ेसे बड़ा साधन है, हथियार है। मेरी रायमें समाजवाद तक पहुंचनेका अिसके सिवा दूसरा कोओी रास्ता नहीं है। -

सत्याग्रहके जरिये समाजके सारे राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक रोगोंको मिटाया जा सकता है।

हरिजनसेवक, २०-७-'४७

१४

अहिंसक राज्य

मुझसे कितने ही लोगोंने संदेहसे सिर डुलाते हुअे कहा है, "लेकिन आप सामान्य जनताको अहिंसा नहीं सिखा सकते। अहिंसाका पालन केवल व्यक्ति ही कर सकते हैं और सो भी विरले व्यक्ति।" मेरी रायमें यह धारणा अेक बड़ी भूल है। यदि मनुष्य-जाति स्वभावसे अहिंसक नहीं होती तो अुसने युगों पहले अपने हाथों अपना नाश कर लिया होता। लेकिन हिंसा और अहिंसाके पारस्परिक संघर्षमें अन्तमें अहिंसा ही सदा विजयी सिद्ध हुअी है। सच तो यह है कि हमने राजनीतिक

बुद्देश्यकी प्राप्तिके लिअे लोगोंमें अहिंसाकी शिक्षाके प्रचारकी पूरी कोशिश करने जितना धीरज ही कभी प्रगट नहीं किया।

यंग अिंडिया, २–१–'३०

मेरी दृष्टिमें राजनीतिक सत्ता कोअी साध्य नहीं है, परन्तु जीवनके प्रत्येक विभागमें लोगोंके लिअे अपनी हालत सुधार सकनेका अेक साधन है। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनेकी शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन अितना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं आत्म-नियमन कर ले, तो किसी प्रतिनिधित्वकी आवश्यकता नहीं रह जाती। अुस समय ज्ञानपूर्ण अराजकताकी स्थिति हो जाती है। अैसी स्थितिमें हरअेक अपना राजा होता है। वह अिस ढंगसे अपने पर शासन करता है कि अपने पड़ोसियोंके लिअे कभी बाधक नहीं बनता। अिसलिअे आदर्श अवस्थामें कोअी राजनीतिक सत्ता नहीं होती, क्योंकि कोअी राज्य नहीं होता। परन्तु जीवनमें आदर्शकी पूरी सिद्धि कभी नहीं होती। अिसीलिअे थोरोने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही अुत्तम सरकार है।

यंग अिंडिया, २–७–'३१

मैं राज्यकी सत्ताकी वृद्धिको बहुत ही भयकी दृष्टिसे देखता हूं। क्योंकि जाहिरा तौर पर तो वह शोषणको कमसे कम करके लाभ पहुंचाती है, परन्तु मनुष्यके व्यक्तित्वको नष्ट करके वह मानव-जातिको बड़ीसे बड़ी हानि पहुंचाती है, जो सब प्रकारकी अुन्नतिकी जड़ है।

मुझे जो बात नापसन्द है वह है बलके आधार पर बना हुआ संगठन, और राज्य अैसा ही संगठन है। स्वेच्छापूर्वक संगठन जरूर होना चाहिये।

दि मॉडर्न रिव्यू, १९३५, पृ० ४१२

समाजकी अहिंसक रचनाके साथ केन्द्रीकरण अेक प्रणालीके रूपमें असंगत है।

हरिजन, १८–१–'४२

अब सवाल यह है कि आदर्श समाजमें कोअी राज्यसत्ता रहेगी या वह अेक बिलकुल अराजक समाज बनेगा? मेरे खयालमें अैसा सवाल पूछनेसे कुछ भी फायदा नहीं हो सकता। अगर हम अैसे समाजके लिअे मेहनत करते रहें, तो वह किसी हद तक धीरे धीरे बनता रहेगा, और अुस हद तक लोगोंको अुससे फायदा पहुंचेगा। युक्लिडने कहा है कि लकीर (रेखा) वही हो सकती है जिसमें चौड़ाअी न हो, लेकिन अैसी लकीर न तो आज तक कोअी बना पाया और न बना पायेगा। फिर भी आदर्श लकीरको खयालमें रखनेसे ही प्रगति हो सकती है। और जो लकीरके बारेमें सच है वही हरअेक आदर्शके बारेमें भी सच है।

हां, अितना याद रखना चाहिये कि आज दुनियामें कहीं भी अराजक समाज मौजूद नहीं है। अगर कभी कहीं बन सकता है, तो अुसका प्रारम्भ हिन्दुस्तानमें ही हो सकता है। क्योंकि हिन्दुस्तानमें अैसा समाज बनानेकी कोशिश की गअी है। आज तक हम आखिरी दरजेकी बहादुरी नहीं दिखा सके; मगर अुसे दिखानेका अेक ही रास्ता है और वह यह है कि जो लोग अुसमें विश्वास रखते हैं वे अुसे दिखावें। अैसा करनेके लिअे जिस तरह हमने जेलके डरको छोड़ दिया है, अुसी तरह मृत्युके डरको भी पूरी तरह छोड़ देना होगा।

हरिजनसेवक, १५-९-'४६

पुलिस-बल

मेरी राय है कि भारतको अहिंसाके रास्ते पर चलकर विकास करना हो, तो अुसे बहुत बातोंमें [illegible] बंटवारा करना पड़ेगा। [illegible] बिना न तो अेक [illegible] है और न अुसकी रक्षा की जा सकती है। [illegible]

रहेगा। फिर चाहे वह जल, थल और हवाअी सेनासे कितना ही सुसज्जित क्यों न हो।

हरिजनसेवक, ३०–१२–'३९

सरकारको पूरी तरह अहिंसक रहनेमें कामयाबी नहीं हो सकती, क्योंकि वह सारी जनताकी प्रतिनिधि होती है। अिस तरहके सतयुगकी मैं आज कल्पना नहीं कर सकता। मगर मुझे भरोसा अवश्य है कि अहिंसा-प्रधान समाज संभव हो सकता है। और मैं अुसीके लिअे काम कर रहा हूं।

हरिजनसेवक, २३–३–'४०

अहिंसक राज्यमें भी पुलिसकी जरूरत हो सकती है। मैं स्वीकार करता हूं कि यह मेरी अपूर्ण अहिंसाका चिह्न है। मुझमें फौजकी तरह पुलिसके बारेमें भी यह घोषणा करनेका साहस नहीं है कि हम पुलिसकी ताकतके बिना काम चला सकते हैं। अवश्य ही मैं अैसे राज्यकी कल्पना कर सकता हूं और करता हूं, जिसमें पुलिसकी जरूरत नहीं होगी; परन्तु यह कल्पना सफल होगी या नहीं, यह तो भविष्य ही बतलायेगा।

परन्तु मेरी कल्पनाकी पुलिस आजकलकी पुलिससे बिलकुल भिन्न होगी। अुसमें सभी सिपाही अहिंसामें माननेवाले होंगे। वे जनताके मालिक नहीं, अुसके सेवक होंगे। लोग स्वाभाविक रूपमें ही अुन्हें हर प्रकारकी सहायता देंगे और आपसके सहयोगसे दिन-दिन घटनेवाले दंगोंका आसानीसे सामना कर लेंगे। पुलिसके पास किसी न किसी प्रकारके हथियार तो होंगे, परन्तु अुन्हें क्वचित् ही काममें लिया जायगा। असलमें तो पुलिसवाले सुधारक बन जायेंगे। अुनका काम मुख्यतः चोर-डाकुओं तक सीमित रह जायगा। मजदूरों और पूंजीपतियोंके झगड़े और हड़तालें अहिंसक राज्यमें यदा-कदा ही होंगे। क्योंकि अहिंसक बहुमतका असर अितना अधिक रहेगा कि समाजके मुख्य तत्त्व अुसका आदर करेंगे। अिसी तरह साम्प्रदायिक दंगोंको भी गुंजाअिश नहीं रहेगी।

हरिजन, १–९–'४०

१५

'सच्चा समाजवादी तो मैं हूं'

[अमेरिकाके सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री लुअी फिशरने सन् १९४६ में जुलाअीके अन्तिम सप्ताहमें गांधीजीसे पंचगनीमें विविध विषयों पर चर्चा की थी। निम्नलिखित अंश श्री प्यारेलालकी रिपोर्टसे लिया गया है, जो समाजवाद और साम्यवाद पर हुअी दोनोंकी चर्चासे सम्बन्धित है।]

गांधीजी: "हालांकि मैं हमारे समाजवादी मित्रोंकी कुरबानी और आत्म-संयमकी भावनाकी वड़ीसे वड़ी कदर करता हूं, फिर भी अुनके और मेरे तरीकेमें जो स्पष्ट फर्क है अुसे मैंने कभी छिपाया नहीं। वे जाहिरा तौर पर हिंसा और अुससे सम्बन्ध रखनेवाली वातोंमें विश्वास रखते हैं, जब कि मेरे लिअे अहिंसा ही सब कुछ है।"

अिससे बातचीतका विषय समाजवादकी ओर मुड़ा। श्री फिशरने वीचमें ही कहा: "जैसे आप समाजवादी हैं वैसे ही वे भी हैं।"

गांधीजी: "सच्चा समाजवादी तो मैं हूं, वे नहीं। अुनमें से कअियोंके पैदा होनेसे पहले भी मैं समाजवादी था। जोहानिसबर्गके अेक अुग्र समाजवादीको मैंने अपने समाजवादी होनेका यकीन करा दिया था। लेकिन अिस वातके कहनेसे यहां कोअी मतलब हासिल नहीं होगा। मेरा यह दावा तो तब भी कायम रहेगा, जब अुनका समाजवाद मिट जायेगा।"

फिशर: "आपके समाजवादसे आपका क्या अर्थ है?"

गांधीजी: "मेरे समाजवादका अर्थ है 'सर्वोदय'। मैं गूंगे, वहरे और अंधोंको मिटाकर अुठना नहीं चाहता। अुनके समाजवादमें अिन लोगोंके लिअे कोअी जगह नहीं है। भौतिक अुन्नति ही अुनका अेकमात्र मकसद है। मसलन्, अमेरिकाका मकसद है कि अुसके हर शहरीके पास अेक मोटर हो। मेरा यह मकसद नहीं। मैं अपने व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके लिअे आजादी चाहता हूं। अगर मैं चाहूं तो आसमानमें टिमटिमाते तारों तक पहुंचनेकी निसैनी बनानेकी आजादी मुझे मिलनी

चाहिये। अिसका मतलब यह नहीं कि मैं अैसी कोअी बात करूंगा ही। दूसरी तरहके समाजवादमें व्यक्तिगत आजादी नहीं है। अुसमें आपका कुछ नहीं होता, आपका अपना शरीर भी आपका नहीं होता।"

फिशर: "हां, लेकिन समाजवादके भी कअी प्रकार हैं। सुधरे हुअे रूपमें मेरे समाजवादका अर्थ यह है कि हर चीज पर स्टेटका हक नहीं है। पर रूसमें अैसा ही है। वहां सचमुच आपके शरीर पर भी आपका हक नहीं होता। बिना किसी गुनाहके आप किसी भी वक्त गिरफ्तार किये जा सकते हैं। वे आपको जहां चाहें वहां भेज सकते हैं।"

गांधीजी: "क्या आपके समाजवादमें राज्यका आपके बच्चों पर अधिकार नहीं होता? और क्या वह अुन्हें मनचाहे तरीकेसे तालीम नहीं देता?"

फिशर: "सभी राज्य अैसा करते हैं। अमेरिका भी अैसा ही करता है।"

गांधीजी: "तब तो रूस और अमेरिकामें कोअी बड़ा फर्क नहीं है।"

फिशर: "आप असलमें तानाशाहीका विरोध करते हैं।"

गांधीजी: "लेकिन अगर समाजवाद तानाशाही नहीं है तो निकम्मे लोगोंका शास्त्रभर है। मैं अपने आपको साम्यवादी भी कहता हूं।"

फिशर: "नहीं, नहीं, अैसा न कहिये। अपनेको साम्यवादी कहना आपके लिअे बड़ी खतरनाक बात है। मैं वही चाहता हूं, जो आप चाहते हैं, जो जयप्रकाश और दूसरे समाजवादी चाहते हैं — अेक आजाद दुनिया। लेकिन साम्यवादी अैसा नहीं चाहते। वे अैसा कायदा चाहते हैं जो शरीर और मन दोनोंको गुलाम बना दे।"

गांधीजी: "क्या मार्क्सके बारेमें भी आपके यही खयाल हैं?"

फिशर: "साम्यवादियोंने अपने मतलबके अनुसार मार्क्सवादको तोड़-मरोड़ लिया है।"

गांधीजी: "लेनिनके बारेमें आपकी क्या राय है?"

फिशर: "लेनिनने अिसकी शुरुआत की थी। स्टालिनने अुसे पूरा कर दिया। जब साम्यवादी आपके पास आते हैं तो वे कांग्रेसमें शामिल

होता जाता है और अुस पर अमल करके अुसे अपनी [illegible] बनाना चाहते हैं।"

गांधीजी: "समाजवादी भी अैसा ही कहते हैं। मेरा साम्यवाद समाजवादसे ज्यादा भिन्न नहीं है। वह दोनोंका मीठा मेल है। साम्यवाद, जैसा कि मैंने अुसे समझा है, समाजवादका कुदरती परिणाम है।"

फिशर: "हां, आप ठीक कहते हैं। अेक समय था जब दोनोंमें फर्क करना कठिन था। लेकिन आज साम्यवादियों और समाजवादियोंमें बड़ा फर्क है।"

गांधीजी: "तो क्या आपका मतलब यह है कि आप स्टालिन-मार्का साम्यवाद नहीं चाहते?"

फिशर: "लेकिन हिन्दुस्तानी साम्यवादी हिन्दुस्तानमें स्टालिन-मार्का साम्यवाद ही कायम करना चाहते हैं। और अुसके लिअे आपके नामका नाजायज फायदा अुठाना चाहते हैं।"

गांधीजी: "लेकिन अिसमें वे कामयाब नहीं होंगे।"

हरिजनसेवक, ८-८-'४६

१६

समाजका समाजवादी नमूना

आजादी नीचेसे शुरू होनी चाहिये। हरअेक गांवमें जमहूरी सल्तनत या पंचायतका राज होगा। अुसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। अिसका मतलब यह है कि हरअेक गांवको अपने पांव पर खड़ा होना होगा — अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी होंगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके। यहां तक कि वह सारी दुनियाके खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सके। अुसे तालीम देकर अिस हद तक तैयार करना होगा कि वह बाहरी हमलेके सामने अपनी रक्षा करते हुअे मर-मिटनेके लायक बन जाय। अिस तरह आखिर हमारी बुनियाद व्यक्ति पर होगी। अिसका यह मतलब नहीं कि पड़ोसियों पर या दुनिया पर भरोसा न रखा जाय; या

अुनकी राजी-खुशीसे दी हुअी मदद न ली जाय। खयाल यह है कि सब आजाद होंगे और सब अेक-दूसरे पर अपना असर डाल सकेंगे। जिस समाजका हरअेक आदमी यह जानता है कि अुसे क्या चाहिये और जिसमें भी बढ़कर जिसमें यह माना जाता है कि बराबरीकी मेहनत करके भी दूसरोंको जो चीज नहीं मिलती है वह खुद भी किसीको नहीं लेनी चाहिये, वह समाज जरूर ही बहुत अूंचे दरजेकी सभ्यतावाला होना चाहिये।

अैसे समाजकी रचना स्वभावतः सत्य और अहिंसा पर ही हो सकती है। मेरी राय है कि जब तक अीश्वर पर जीता-जागता विश्वास न हो, तब तक सत्य और अहिंसा पर चलना नामुमकिन है। अीश्वर या खुदा वह जीवित शक्ति है, जिसमें दुनियाकी तमाम शक्तियां समा जाती हैं। वह किसीका सहारा नहीं लेती और दुनियाकी दूसरी सब शक्तियोंके खतम हो जाने पर भी कायम रहती है। अिस जीते-जागते प्रकाश पर, जिसने अपने दामनमें सब कुछ लपेट रखा है, मैं विश्वास न रखूं, तो मैं समझ न सकूंगा कि मैं किस तरह जिन्दा हूं।

अैसा समाज अनगिनत गांवोंका बना होगा। अुसका फैलाव अेकके अूपर अेकके ढंग पर नहीं, बल्कि लहरोंकी तरह अेकके बाद अेककी शकलमें होगा। जिन्दगी मीनारकी शकलमें नहीं होगी, जहां अूपरकी तंग चोटीको नीचेके चौड़े पाये पर खड़ा होना पड़ता है। वहां तो समुद्रकी लहरोंकी तरह जिन्दगी अेकके बाद अेक घेरेकी शकलमें होगी और व्यक्ति अुसका मध्यबिन्दु होगा। यह व्यक्ति हमेशा अपने गांवके खातिर मिटनेको तैयार रहेगा। गांव अपने आसपासके गांवोंके लिअे मिटनेको तैयार होगा। अिस तरह आखिर सारा समाज अैसे लोगोंका बन जायगा, जो अुद्धत बनकर कभी किसी पर हमला नहीं करते, बल्कि हमेशा नम्र रहते हैं और अपनेमें समुद्रकी अुस शानको महसूस करते हैं जिसके वे अभिन्न अंग हैं।

अिसलिअे सबसे बाहरका घेरा या दायरा अपनी शक्तिका अुपयोग भीतरवालोंको कुचलनेमें नहीं करेगा, बल्कि अुन सबको शक्ति देगा और अुनसे शक्ति पायेगा। मुझे ताना दिया जा सकता है कि

यह सब तो खयाली तसवीर है, जिसके बारेमें सोचकर वक्त क्यों बिगाड़ा जाय? युक्लिडकी परिभाषावाला बिन्दु कोअी मनुष्य खींच नहीं सकता, फिर भी अुसकी कीमत हमेशा रही है, और रहेगी। अिसी तरह मेरी अिस तसवीरकी भी कीमत है। अिसके लिअे मनुष्य जिन्दा रह सकता है। अगरचे अिस तसवीरको पूरी तरह बनाना या पाना मुमकिन नहीं है, तो भी अिस सही तसवीरको पाना या अिस तक पहुंचना हिन्दुस्तानकी जिन्दगीका मकसद होना चाहिये। जिस चीजको हम चाहते हैं अुसकी सही-सही तसवीर हमारे सामने होनी चाहिये। तभी हम अुससे मिलती-जुलती कोअी चीज पानेकी आशा रख सकते हैं। अगर हिन्दुस्तानके हरअेक गांवमें पंचायती राज्य कायम हुआ, तो मैं अपनी अिस तसवीरकी सचाअी साबित कर सकूंगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनों बराबर होंगे या यों कहिये कि न कोअी पहला होगा, न आखिरी।

अिस तसवीरमें हरअेक धर्मकी अपनी पूरी और बराबरीकी जगह होगी। हम सब अेक ही आलीशान पेड़के पत्ते हैं। अिस पेड़की जड़ हिलाअी नहीं जा सकती, क्योंकि वह पाताल तक पहुंची हुअी है। जबरदस्तसे जबरदस्त आंधी भी अुसे हिला नहीं सकती।

अिस तसवीरमें अुन मशीनोंके लिअे कोअी जगह न होगी, जो मनुष्यकी मेहनतकी जगह लेकर चन्द लोगोंके हाथोंमें सारी सत्ता अिकट्ठा कर देती हैं। सभ्य और संस्कारी मानवोंकी दुनियामें मेहनतकी अपनी अनोखी जगह है। अुसमें अैसी मशीनोंकी गुंजाअिश होगी, जो हर आदमीको अुसके काममें मदद पहुंचायें। लेकिन मुझे कबूल करना चाहिये कि मैंने कभी बैठकर यह सोचा नहीं कि अिस तरहकी मशीन कैसी हो सकती है। सिलाअीकी सिंगर मशीनका खयाल मुझे आया था। लेकिन अुसका जिक्र भी मैंने यों ही कर दिया था। अपनी अिस तसवीरको पूर्ण बनानेके लिअे मुझे अुसकी जरूरत नहीं।

हरिजनसेवक, २८–७–'४६

गांधी-विचार-मालाकी अन्य पुस्तकें

पुस्तक	विवरण
१. पंचायत राज कीमत ०.३० डा. खर्च ०.१३	ग्राम-पंचायतोंके महत्त्व और अुनके कार्य पर प्रकाश डालती है।
२. सन्तति-नियमन : *सही मार्ग और गलत मार्ग* कीमत ०.४० डा. खर्च ०.१३	सन्तति-नियमनके लाभदायी औ *हानिकारक दोनों प्रकारके अुपायों* चर्चा करती है।
३. शाकाहारका नैतिक आधार कीमत ०.२५ डा. खर्च ०.१३	शाकाहार क्यों और मांसाहार क्य नहीं, अिन प्रश्नोंका अुत्तर देती है
४. गीताका सन्देश कीमत ०.३० डा. खर्च ०.१३	गीताके महत्त्व और अुसके सन्देश केन्द्रीय शिक्षाकी चर्चा करती है।
५. विश्वशान्तिका अहिंसक मार्ग कीमत ०.४० डा. खर्च ०.१३	युद्धोंके अन्तका और स्थायी शान्तिक अहिंसक मार्ग बताती है।
६. समाजमें स्त्रीका स्थान और कार्य कीमत ०.२५ डा. खर्च ०.१३	समाजमें स्त्रियोंके महत्त्व औ कार्यकी चर्चा करती है तथा अुनक प्रगतिका मार्ग बताती है।
७. साम्यवाद और साम्यवादी कीमत ०.२० डा. खर्च ०.१३	साम्यवादियोंके तथा गांधीजी सिद्धान्तोंका भेद बताती है।
८. सहकारी खेती कीमत ०.२० डा. खर्च ०.१३	सहकारी खेतीकी जरूरत, अुस पद्धति और अुसके लाभ बताती

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-